

सृजनधारा

केंद्रीय विद्यालय

उमवि जलगांव

KENDRIYA VIDYALAYA

NMU JALGAON



विद्यालय पत्रिका 2020 -21



# केंद्रीय विद्यालय, जलगांव

की विद्यालय ई-पत्रिका





## प्रभारी उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन, मुंबई संभाग का संदेश



केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केंद्रीय विद्यालय संगठन  
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)  
समाग्रीय कार्यालय : आई.आई.टी. कैम्पस, पवई, मुम्बई-400076  
**KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN**  
(Under Min. of EDUCATION, Govt. of India)  
Regional Office : I.I.T. Campus, Powai, Mumbai-400 076  
दूरभाष/ Tel. (022) 2572 8060/2328/6763/1614/0717 (EAPBX)  
ई-मेल/E-mail : [kvs Mumbai region@gmail.com](mailto:kvs Mumbai region@gmail.com)  
WEBSITE : <https://romumbai.kvs.gov.in>

एस.पी.पाटिल  
प्रभारी उपायुक्त

फा.क्र./संदेश/2021/उपायुक्त/केविस/मु.सं.


दिनांक : 02.02.2021

### संदेश

केंद्रीय विद्यालय, उमवि, जलगांव द्वारा वार्षिक विद्यालय पत्रिका 'सृजनधारा-2020-21' का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यालय की यह पहल एक स्वागतार्ह कदम है, जिससे कोरोना संकट काल में भी विद्यार्थियों के सर्वांगिन विकास की प्रक्रिया को अबाध गति से संचालित करने के दृढ़ संकल्प को देखा जा सकता है। मानवीय मूल्यों तथा कोमल भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति हेतु पत्रिका 'सृजनधारा-2020-21' विद्यार्थियों और सभी कर्मियों का अपना मंच है।

'सृजनधारा-2020-21' के माध्यम से नवरचनाकारों को साहित्य साधना का अवसर प्रदान करने और विद्यार्थियों के सर्वांगिन विकास के संकल्प को दृढ़ता से पूर्ण करने के लिए प्राचार्य, शिक्षक तथा शिक्षकेतर कर्मियों को हार्दिक बधाई।

प्राचार्य  
केंद्रीय विद्यालय  
जलगांव

  
(एस.पी.पाटिल)



सहायक आयुक्त, के. वि. संगठन,  
(मुंबई संभाग) का संदेश



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय, उमवि, जलगांव द्वारा अपनी वार्षिक विद्यालय पत्रिका 'सृजनधारा-2020-21' प्रकाशित की जा रही है। विद्यालयी जीवन में विद्यालय पत्रिका का अपना विशेष महत्व होता है। विद्यार्थियों एवं कर्मियों की अप्रकाशित प्रतिभा को सामने लाने और अपने कौशल पर विश्वास जगाने में विद्यालय पत्रिका की अद्वितीय भूमिका होती है।

वर्ष-2020 विपदाओं से भरा रहा किंतु विद्यार्थियों की शैक्षिक, बौद्धिक गतिविधियों के साथ-साथ शारीरिक गतिविधियों का संचालन भी बिना किसी व्यवधान के किया जा रहा है, जिसकी संपूर्ण जानकारी इस विद्यालय विद्यालय पत्रिका के माध्यम से पाठकों को प्राप्त होगी।

सभी रचनाकारों ने अपनी सर्वोत्तम प्रतिभा का परिचय दिया है। इस सफल प्रयास के लिए मैं विद्यालय के प्राचार्य, विद्यालय पत्रिका के संपादक मंडल और शिक्षकों तथा कर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूँ, और कामना करता हूँ कि विद्यालय की यह ज्ञानयात्रा निरंतर प्रगति पथ अग्रेसर रहे।

*Rulak*

श्री. राजेंद्र लाले,

सहायक आयुक्त,

केंद्रीय विद्यालय संगठन, (मुंबई संभाग)







## विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष का संदेश



॥ अमरी वेद्यु प्राणयोः ॥  
**Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon**

Umavinagar, Jalgaon - 425 001 (Maharashtra) INDIA  
(formerly North Maharashtra University, Jalgaon)

**Prof. P. P. Patil**  
Ph.D., F.M.A.Sc.  
**VICE-CHANCELLOR**

### MESSAGE


I am happy to know that Kendriya Vidyalaya, KBCNMU, Jalgaon is bringing out E-magazine "**Srujandhara**".

Vidyalaya Patrika "**Srujandhara**" in digital form is a portal carrying the history of the school, informing the readers about its progress especially when it is the 25<sup>th</sup> year of its establishment. This valuable publication is an opportunity for the students to showcase their talents.

KVS encourages the students to engage themselves in a plethora of multifarious activities ranging from academics, sports, art, craft, singing, dancing, science exhibitions and youth parliaments.

I congratulate the Editorial Board for their tireless efforts in bringing out the digital magazine.

My Best Wishes to the E-magazine "**Srujandhara**".

  
(Prof. P. P. Patil)  
Vice-Chancellor

Ph.: (O) +91-257-2258401, 2258402 (R) +91-257-2258404, 2281978  
Fax: (O) +91-257-2258403 (Mob.) : +91 9423185071, +91 9422215440  
E-mail : vcb@nmu.ac.in Web : www.nmu.ac.in





## प्राचार्य की कलम से...✍



ई-पत्रिका 'सृजनधारा 2020-21' आप सभी विद्यार्थी, शिक्षक रचनाकारों के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का मंच है। इस मंच के माध्यम से आपकी अप्रकाशित प्रतिभा को सामने लाने का यह प्रामाणिक प्रयास है। साथ ही कोरोना संकट काल में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के संकल्प को दोहराते विद्यालय द्वारा किए गए नवाचारों का परिचय आपको इस ई-पत्रिका के माध्यम से अवश्य होगा यह मुझे विश्वास है।

कोरोना की इस संकट की घड़ी को एक अवसर के रूप में परिवर्तित कर विद्यालय के शिक्षकों ने अपना सर्वोत्तम योगदान दिया है, जिसका प्रामाणिक साक्ष्य आपको इस ई-पत्रिका के माध्यम से प्राप्त होगा।

इस ई-पत्रिका के प्रकाशन के अवसर में सभी शिक्षकों और कर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।



मैथ्यू अब्राहम,

प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय, उमवि जलगाँव





## संपादक की कलम से...✍



सभी पाठकों के साथ विद्यालय की ई-पत्रिका साझा करते हुए मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से विद्यालय के विकास का उर्ध्व आलेख देखा जा सकता है। जिसमें केवल साहित्य ही नहीं क्रीडा, कला और शैक्षिक क्षेत्र में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा अर्जित उपलब्धियों की जानकारी दी गई है। इस पत्रिका में विद्यार्थियों की रचनाएँ उनके विकसित होते व्यक्तित्व की परिचायक है। यह ई-पत्रिका कोरोना संकट काल में विद्यालय द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत करनेवाला प्रामाणिक दस्तावेज है।

प्राचार्य महोदय के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने ई-पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रोत्साहित कर उचित मार्गदर्शन किया। इस पत्रिका को मूर्त रूप देने के लिए अथक परिश्रम करनेवाले संपादक मंडल के सभी सदस्य, विद्यार्थी एवं शिक्षक रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। आशा है आप ई-पत्रिका के इस अंक को पढ़कर लाभान्वित होंगे।

संतोष दादा पाटील, प्रधान संपादक,  
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिंदी



## प्रधान संरक्षक



श्री. मेथ्यू अब्राहम, प्राचार्य

## संपादक मंडल

### हिंदी विभाग



संतोष दादा पाटील,  
प्र. स्नातक शिक्षक हिंदी

### अंग्रेजी विभाग



प्रीति सोजवल,  
प्र. स्नातक शिक्षिका अंग्रेजी

### संस्कृत विभाग



माला देवी,  
प्र. स्नातक शिक्षिका संस्कृत

### प्राथमिक विभाग



मिनाक्षी मा. पाटील,  
प्राथमिक शिक्षिका

### प्राथमिक विभाग



पूनम खरात,  
प्राथमिक शिक्षिका

### कला विभाग



शैलजा मीना,  
प्र. स्नातक शिक्षिका कला



# MARCH 2020 CLASS X AISSE TOPPERS CBSE BOARD RESULT



फाल्गुन सुरेश सरोदे,  
96.20%



विवेक शिवाजी शिंदे,  
94.60%



वृशल अमोल पाटील,  
89.90%



## हार्दिक अभिनंदन...



**CLASS 10<sup>th</sup> BATCH 2020-2021**



# केंद्रीय विद्यालय, उमवि, जलगाँव

## विद्यार्थी परिषद



अद्वितीया पाटील,

School Captain (छात्रा)



जय पाटील,

School Captain (छात्र)



पल्लवी महाजन (कक्षा -11)

School Vice-Captain, छात्रा



वृषल पाटील (कक्षा -11)

School Vice-Captain, छात्र



वैष्णवी पाटील (कक्षा -12)

School Sports-Captain, छात्रा



प्रवीण जाधव (कक्षा -10)

School Sports-Captain, छात्र



नेहा पवार (कक्षा -12)

School CCA-Captain, छात्रा



विवेक शिंदे (कक्षा -11)

School CCA-Captain, छात्र

## सदन और सदनाध्यक्ष

शिवाजी सदन प्रमुख छात्र और छात्रा

सदनाध्यक्ष



निशिका, XII



तिलक वर्मा, XII



रवींद्र चौहान, PGT (Bio)

टैगोर सदन प्रमुख छात्र और छात्रा

सदनाध्यक्ष



दुर्गा पाटील, XII



फरहान शेख, XI



विवेक साहनी, PGT (Physics)

अशोक सदन प्रमुख छात्र और छात्रा

सदनाध्यक्ष



मानसी भावसार, XII



रोहिल शेख, XII



नीरज कलवानी, PGT (Chemistry)

रमण सदन प्रमुख छात्र और छात्रा

सदनाध्यक्ष



कृष्णा पाटील, XII



यश पाटील, XI



नितिन आर्से, PGT (CS)



# हिंदी विभाग



## मेरी जिद... (लघुकथा)

श्री. मैथ्यू  
अब्राहम,  
प्राचार्य



आज एक कहानी सुनाता हूँ, एक ऐसी लड़की की कहानी जो उम्र के 14-15 साल में ही विवाह के बंधन में बंध गई। तमिलनाडू के दिंडीगल इलाके में जिसका जन्म हुआ और 14 साल छोटी सी उम्र में ही एक पुलिस कांस्टेबल के साथ शादी हो गई। लगभग 18 साल की आयु में जिसकी गोद में दो बच्चे थे।

एक दिन वह अपने पति के साथ पुलिस परेड देखने गई। उसे पहली बार यह परेड देखी थी, परेड के बाद अपने पति से पूछा, "आप सभी लोग किस सैल्यूट कर रहे थे?" पति देव मुसकुराते हुए बोले, "वह हमारे वरिष्ठ है, वे आईपीएस स्तर के अधिकारी होते हैं।" यह सुनते ही उसकी आंखें

चमक उठी और बोली, "मैं भी ऐसा सैल्यूट पाना चाहती हूँ, मैं भी आईपीएस बनूंगी।" उस वक्त अपनी पत्नी की इन बातों को पति देव ने गंभीरता से नहीं लिया। लेकिन अब यह जिद रोज की ही हो गई थी। वह रोज अपने पति से कहती, "मैं भी वह सैल्यूट पाना चाहती हूँ, आईपीएस बनना चाहती हूँ।"

एक दिन पति ने उसे जवाब दिया, "ठीक है पहले दसवीं तो पास हो जाओ।" तब याद आया, "अरे हां, जब शादी हुई तब तो मैं दसवीं कक्षा में भी नहीं थी।" पति ने फिर विस्तार से समझाया की, "पहले तुम्हें कक्षा दसवीं, 12वीं, स्नातक की पदवी प्राप्त करनी होगी। इसके बाद तुम आईपीएस बनने के लिए परीक्षा दे पाओगी।" अपने पति की बात खत्म होने पर उसकी वही रट जारी रही, "मुझे भी वह सैल्यूट चाहिए। मुझे वह..." अपनी पत्नी के आईपीएस के लिए इस जुनून को देखकर पति देव ने उसकी पूरी सहायता करने का मन



बना लिया। निजी उम्मीदवार के रूप में इस महिला ने कक्षा दसवीं फिर बारहवीं और देखते ही देखते हैं काफी अच्छे अंको से स्नातक पदवी भी प्राप्त कर ली। अपने लक्ष्य के प्रति जुनून ही हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। अब सवाल था लोक सेवा आयोग की परीक्षा के लिए तैयारी। इस परीक्षा की दृष्टि से दिंडीगल में ना तो कोई कोचिंग सेंटर ही था, और ना ही कोई अन्य व्यवस्था। लेकिन इससे भी रास्ता निकालने के लिए महिला ने अपने पति से बात की। तय हुआ कि चेन्नई के एक कोचिंग सेंटर में दाखिला करवाया जाए और अब वहां चेन्नई पहुंच गई। अब वही किराए से रह कर पढ़ाई करने लगी। दिन पर दिन बीतने लगे लड़की अपनी पढ़ाई में व्यस्त थी, इसी बीच लोक सेवा आयोग की पूर्व परीक्षाओं के लिए विज्ञप्ति आ गई। इस लड़की ने भी पहली बार लोक सेवा आयोग की पूर्व परीक्षा दी, किंतु सफल न हो सकी। कुछ दिनों बाद दूसरी बात

परीक्षा दी, तीसरी बार परीक्षा दी किंतु असफलता ने लड़की का साथ नहीं छोड़ा। कुछ मायूसी लड़की के चेहरे पर साफ झलक रही थी, उसके पति और परिवार वालों ने उसे समझाया घर वापस लौटने के लिए कहा। तब उसने अपने वचन को पुनः दोहराया और एक अवसर के लिए अपने घरवालों को मना लिया। अब इस बार मेहनत में कोई कसर न छोड़ी, दिन-रात केवल एक ही उद्देश्य अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ना। चौथी बार वह परीक्षा देने जा रही थी। इस बार उसकी मेहनत रंग लाई, उसने कहा कि अच्छे अंको से पूर्व परीक्षा पास कर ली। साथ ही मुख्य परीक्षा में भी अपनी पढ़ाई के दम पर अच्छे अंक प्राप्त किए और साथ ही अच्छा स्थान भी। साक्षात्कार में भी कोई कसर नहीं छोड़ी।

वह लड़की अब अपने मंजिल को पा चुकी थी। असफलता की सीढ़ियों को पार करते हुए वह सफलता की मंजिल को पा चुकी

थी। बहुत अच्छे अंक प्राप्त करने पर वह आईपीएस अधिकारी बनी। यही लड़की है, मुंबई जोन चार की डीसीपी एन. अंबिका, आईपीएस। लोकमत टीवी के साथ डीसीपी एन. अंबिका का एक साक्षात्कार मैं देख रहा था। जिसमें उनसे पूछा गया कि, "आप मूलतः चेन्नई से है और इतनी अच्छी हिंदी तथा मराठी कैसे बोल लेती है?" उन्होंने कहा, "यदि मुझे उस दिन वह परेड देखने का मौका न मिलता, तो शायद आज यह संभव ना होता। उस दिन जिस सैल्यूट को देखा, उसी से प्रेरणा पाकर मन में ठान लिया कि मुझे भी चाहिए वह सैल्यूट.... मुझे भी बनना है आईपीएस।" अपने जुनून को उन्होंने बनाए रखा। और हमेशा उस से प्रेरित होकर अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रयास जारी रखें, हर बार मिलने वाली असफलता से निराश न होकर आगे बढ़ने की



ललक को बनाए रखा। यह ज़िद ही तो है, जो हमेशा हमें प्रेरणा देती है, आगे बढ़ने के लिए रास्ता भी दिखाती है। अपने सपनों को पूरा करने के लिए इस ज़िद और जुनून का होना अनिवार्य हो जाता है। सपनों के बारे में एपीजे अब्दुल कलाम जी ने बहुत खूब कहा है की, "सपने देखने हैं तो बड़े देखो और जब तक उन्हें पूरा ना कर लो, चैन से ना बैठो। अपने सपनों के लिए मेहनत करते रहो।" एन. अंबिका जी की यह ज़िद ही तो थी कि मुझे चाहिए वह सैल्यूट... मुझे बनना है आईपीएस। जरा सोचिए, कल्पना करना भी कितना मुश्किल है कि जो लड़की दसवीं भी पास नहीं है, सिर्फ अपने पति के साथ परेड में पुलिस वालों को सैल्यूट करते हुए देखती है और लक्ष्य रखती है आईपीएस बनने का। हमें प्रेरणा देती है, कठिन परिस्थितियों से लड़कर मेहनत करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की।

## आजादी



यशस्वी,  
कक्षा सातवीं

पंछी है कैद अगर,  
तो उड़ने में कर मदद तू।  
रात है काली अगर,  
दीया जलाकर रोशन कर दे तू।  
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,  
सब के जीवन का कर सम्मान तू।  
तोड़ दे दीवारें सारी,  
आगे बढ़ विजय हो,  
उन वीरों ने क्या पाया,  
अगर तू अब भी डर में खोया।  
उठ जा तू, छू ले आसमान,  
आजादी पर हैं सबका हक एक  
समान।

## “शिक्षक”

भाविका सोनवणे,  
कक्षा सातवीं



आदर्शों की मिसाल बनकर,  
बाल जीवन संवारता शिक्षक।  
सदाबहार फूलों-सा खिल कर,  
महकता और महकाता शिक्षक।  
नित नए प्रेरक आयाम लेकर,  
हर पल भव्य बनाता शिक्षक।  
संचित ज्ञान का धन हमें देकर,  
खुशियां खूब मनाता शिक्षक।  
पाप व लालच से डरने की,  
सच्ची सीख सिखाता शिक्षक।  
देश के लिए मर मिटने की,  
बलिदानी राह दिखाता शिक्षक।  
प्रकाश पुंज का आधार बनकर,  
कर्तव्य अपना निभाता शिक्षक।

## "सच्चाई"

धर्मेन्द्र सिंह,  
प्रशिक्षित  
स्नातक शिक्षक,  
सामाजिक  
विज्ञान



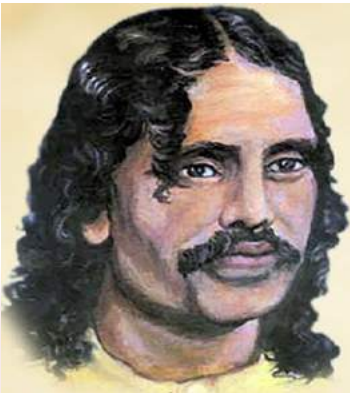
"अगर हम बनावटी और बेईमान इंसान बने रहते हैं, तो हम अपनी पत्नी, अपने परिवार के सदस्यों, या अपने मित्रों या अपने सहकर्मियों किसी से भी संबंध बनाये नहीं रख सकते क्योंकि हम हमेशा झूठ बोलते हैं, हम हमेशा लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। किसी को भी प्रभावित करने की जरूरत नहीं है। हम किसे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे

हैं?

हमें अस्वाभाविक बनने के लिये बहुत प्रयास करना पड़ता है। झूठ बोलने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ता है और हमें उसे याद भी रखना पड़ता है। झूठ बोलने के लिए हमें बहुत ही सृजनात्मक होना पड़ता है, लेकिन सच बोलने के लिए हमें केवल सरल होना है। सत्य पवित्र है जो सीधे हृदय से आता है। ईश्वर ऐसे लोगों पर खूब प्रेम बरसाता है।

आज के आधुनिक युग में सच्चाई के मायने बदलते जा रहे हैं। किंतु समय सापेक्ष सत्य कभी संपूर्ण सत्य की परिधि में नहीं आता। अतः किसी को प्रभावित करने की कोशिश करने के बजाय, हमें अपने

आप को सरल,  
स्वाभाविक,  
सत्य का पालन  
करने वाला  
बनाने की  
कोशिश करनी  
चाहिए।



आधुनिक हिंदी साहित्य के  
पितामह कहे जाने वाले  
**भारतेन्दु हरिश्चंद्र**

9 सितम्बर, 1850-6 जनवरी, 1885

## पुस्तकालय का महत्व

श्रीमती. विद्या  
चंद्रकांत सातपुते,  
पुस्तकालय  
अध्यक्षा



लाइब्रेरी को पुस्तकालय भी कहते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण संसाधन है। लाइब्रेरी में हजारों लाखों की संख्या में विभिन्न प्रकार की किताबें होती हैं ऐसी बहुत सी पुस्तकें होती हैं जो बहुत और दुर्लभ होती हैं। हर व्यक्ति उसे नहीं खरीद सकता। इस तरह की पुस्तकें हमें लाइब्रेरी में आसानी से मिल जाती है। पढ़नेवालों के लिए यह किसी स्वर्ग से कम नहीं होता है।

लाइब्रेरी का बहुत बड़ा फायदा है कि किसी भी विषय पर सैकड़ों किताबें मिल जाती हैं जिससे आजकल लाइब्रेरी का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। डिजिटल

क्रांति आने के बाद ऑनलाइन लाइब्रेरी की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

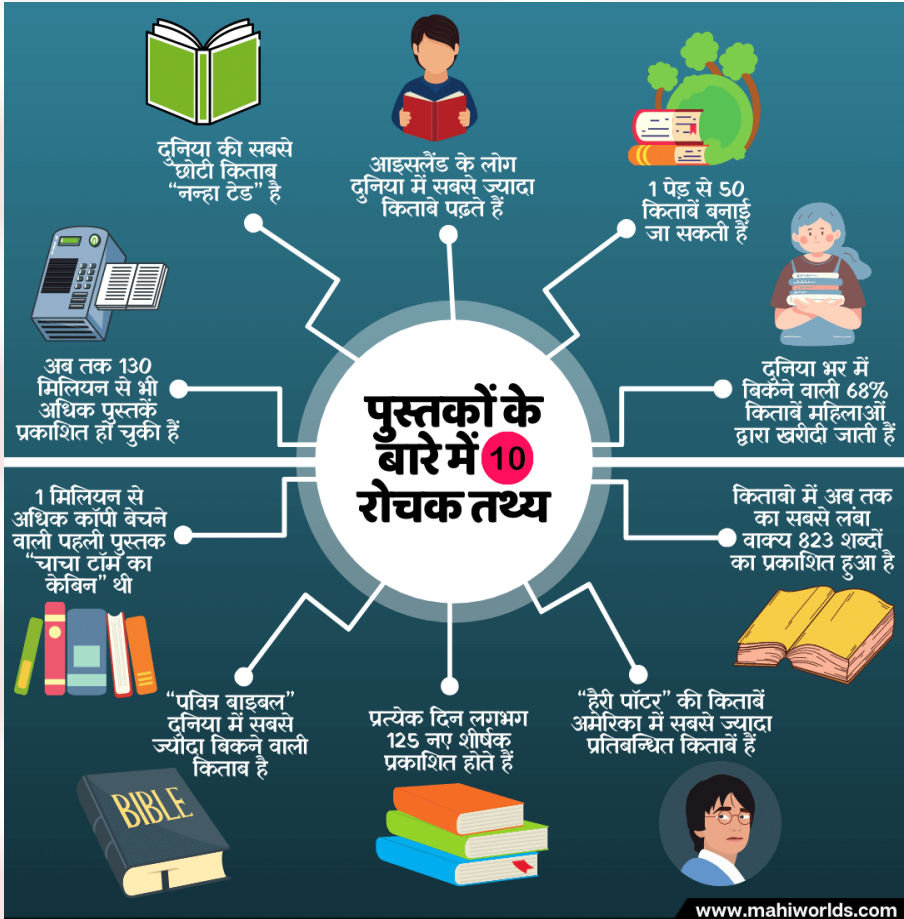
पुस्तकालय ज्ञान के वे मंदिर हैं जो मानव इच्छा को शांत करते हैं, उसे विभिन्न विषयों पर नई जानकारियां उपलब्ध करते हैं, ज्ञान के संचित कोश से उसे निश्चित करते हैं पुस्तकालय एक ऐसा स्थान जहां अनेक पुस्तकों को संग्रहीत करके उनका एक विशालकाय भंडार बनाया जाता है। अतीत झरोखों की झलक दिखाते हैं तथा उसके बौद्धिक स्तर को उन्नत करते हैं।

दुनिया में विषय अनंत हैं उन विषयों से संबंधित पुस्तकें भी अनंत हैं। बड़े-बड़े पुस्तकालयों में लाखों पुस्तकें संग्रहीत होती हैं। इनमें वे दुर्लभ पुस्तकें भी होती हैं जो अब अप्राप्य हैं जिन्हें किसी भी कीमत पर खरीदा नहीं जा सकता।



उन सभी पुस्तकों को खरीद कर पढ़ पाना किसी के बस की बात नहीं। इस आवश्यकता की पूर्ति पुस्तकालय अत्यंत सुगमता से कर सकता है। पुस्तकालय में बैठकर कोई भी व्यक्ति एक ही विषय पर

अनेक व्यक्तियों के विचारों से परिचित हो सकता है। अन्य विषयों के साथ अपने विषय का तुलनात्मक अध्ययन भी कर सकता है। अनगिनत पुस्तकों वाले अधिकांश पुस्तकालय पूरी तरह



व्यवस्थित होते हैं। विद्यार्थी कुछ देर में ही अपनी जरूरत की पुस्तक पा सकता है।

पुस्तकालय में जाते समय उसके नियमों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। वहां जाकर वही पुस्तकें पढ़नी चाहिए जिनकी आपको जरूरत हो। पुस्तकालय में ऐसी अनेक पुस्तकें होती हैं। यदि विद्यार्थी पुस्तकालय में केवल किस्से कहानियों की किताबें पढ़कर अपना समय बर्बाद करने के लिए जाते हो तो सदुपयोग करना चाहिए तथा पुस्तकालय में बैठकर शांत वातावरण में एकाग्रचित्त होकर अध्ययन करना चाहिए। पुस्तकालय में बैठकर पुस्तकें पढ़ते समय बिल्कुल शांत रहना चाहिए। पुस्तकालय की पुस्तकों पर पेंसिल या पेन से निशान लगाना, उनके चित्रों आदि को फाड़ना या गंदा करना ठीक नहीं है। वहां बैठकर

हमें औरों का भी ध्यान रखना चाहिए। हमें कोई ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए जिससे दूसरों को असुविधा हो। पुस्तकालय किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं इसलिए वहां संग्रहीत पुस्तकें सामाजिक संपत्ति होती हैं अतः हमें पुस्तकालय की पुस्तकों को उसी दृष्टि से देखना चाहिए। पुस्तकालयों में संकलित पुस्तकों के माध्यम से व्यक्ति भाव-विचार, भाषा, ज्ञान-विज्ञान आदि सभी विषयों के क्रमिक विकास का इतिहास जानकार उनका किसी भी विशिष्ट दृष्टि से अध्ययन कर सकता है। अपने प्रिय महापुरुष, राजनेता, कवि, साहित्यकार आदि के जीवन और विचारों से कोई व्यक्ति सहज ही साक्षात्कार संभव हो जाता है। जातियों, राष्ट्रों, धर्मों आदि के उत्थान-पतन का इतिहास भी पुस्तकों से जानकर उत्थान और

पतन के कारणों को अपनाया या  
उनसे बचा जा सकता है।

पुस्तकालय ज्ञान-विज्ञान के अनंत  
भंडार होते हैं। उन्हें अपने भीतर  
समाए रहने वाला अनंत नदी-धारा,  
विचार-रत्नों, भाव-विचार-प्राणियों का  
अनंत सागर एवं निधि कहा जा  
सकता है। जैसे ज्ञान-विज्ञान के  
कई तरह के साधन पाकर भी  
सागर की अथाह गहराई एवं अछोर  
स्वरूप आकार को सही रूप से  
नाप-तोल संभव नहीं हुआ करता,  
उसी प्रकार पुस्तकालयों में संचित  
अथाह ज्ञान-विज्ञान, विचारों-भावों  
आदि को खंगाल पाना भी नितांत  
असंभव हुआ करता है। जैसे  
अनंत नदियों का प्रवाह नित्य प्रति  
सागर में मिलते रहकर उसे भरा  
रखता है वैसे ही नित्य नई-नई  
पुस्तकें भी प्रकाशित होकर  
पुस्तकालयों को भरा-पूरा किए  
रहती हैं। यही उनका महत्त्व एवं  
गौरव है।

Reference

evirtualguru.com

बैठ जाता हूँ मिट्टी पे अक्सर,  
क्योंकि मुझे अपनी औकात  
अच्छी लगती है...



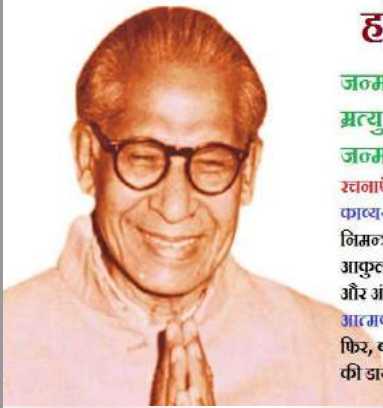
संकलन  
पद्माक्षी सोनवणे,  
कक्षा 6

बैठ जाता हूँ मिट्टी पे अक्सर,  
क्योंकि मुझे अपनी औकात अच्छी  
लगती है,  
मैंने समंदर से सीखा है जीने का  
सलीका,  
चुपचाप से बहना और मौज में  
रहना।  
ऐसा नहीं कि मुझमें कोई ऐब नहीं  
है,  
पर सच कहता हूँ मुझमें कोई  
फरेब नहीं है।  
एक घड़ी खरीदकर हाथ में क्या  
बाँध ली  
वक्त पीछे ही पड़ गया मेरे।

सोचा था घर बनाकर बैठूंगा सुकून  
से  
सुकून की बात मत कर ऐ गालिब,  
बचपन बाला इतवार अब नहीं  
आता ।  
शौक तो माँ-बाप के पैसों से पूरे  
होते है,  
अपने पैसों से तो बस जरूरतें ही  
पूरी हो पाती है ।  
जीवन की भाग-दौड़ में क्यों वक्त  
के साथ रंगत खो जाती है?  
हँसती-खेलती जिंदगी भी आम हो  
जाती है ।  
एक सबेरा था जब हँस कर उठते  
थे हम,

और आज कई बार बिना मुसकुराते  
ही शाम हो जाती है ।  
कितने दूर निकल गए रिश्तों को  
निभाते-निभाते,  
खुद को खो दिया हमने, अपनों को  
पाते-पाते ।  
लोग कहते है, हम मुसकुराते बहुत  
है,  
और हम थक गए दर्द छिपाते-  
छिपाते ।  
खुश हूँ और सब को खुश रखता  
हूँ,  
लापरवाह है फिर भी सब की  
परवाह करता हूँ ।  
मालूम है कोई मोल नहीं मेरा फिर

भी,  
कुछ अनमोल  
लोगों के साथ  
रिश्ता रखता  
हूँ ।  
मूल रचनाकार  
- हरिवंशराय  
बच्चन



## हरिवंशराय बच्चन

जन्म : सन् 1907 ई०

मृत्यु : 18 जनवरी सन् 2003

जन्म स्थान : प्रयाग, उत्तर प्रदेश

रचनाएँ:

काव्य- मधुशाला, मधुक्लेश, मधुवाला, निशा-  
निमग्न, एकान्त संगीत, सतरंगिणी, मिलान-यामिनी,  
आफुल अन्तर, बुद्ध और नाचघर, प्रणय-पत्रिका, आरती  
और अंगार आदि

आत्मकथा- वया भूलूँ वया याद करूँ, वीड का निर्माण  
फिर, बसोरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक, प्रवास  
की जयशी

## “कविता”

तन्मय सोनवणे,

कक्षा- 6



कविता से मनुष्य भाव की रक्षा होती है। सृष्टि के पदार्थ या व्यापार विशेष को कविता इस तरह व्यक्ति करती है मानो वे पदार्थ या व्यापार विशेष नेत्रों के सामने नाचने लगते हैं। वे मूर्तिमान दिखाई देने लगते हैं। उनकी उत्तमता या अनुत्तमता का विवेचन करके में बुद्धि से काम लेने की जरूरत नहीं पड़ती कविता की प्रेरणा से मनोवेग के प्रवाह जोर से बहने लगते हैं। तात्पर्य यह की कविता मनोवेग को उत्तेजित करने का एक उत्तम साधन है।

## “पापा की परी”

प्रगति पाटील,

कक्षा - सातवीं

मैं बोझ नहीं हूँ  
शाम हो गई अभी घूमने चलो न  
पापा  
चलते चलते थक गई कंधे पे बिठा  
लो न पापा  
अंधेरे से डर लगता सीने से लगा  
लो ना पापा  
मम्मी तो सो गई  
आप हि थपकी देकर सुलाओ ना  
पापा  
स्कूल तो पूरी हो गई  
अब कोलेज जाने दो ना पापा  
पाल पोस कर बड़ा किया  
अब जुदा तो मत करो ना पापा  
इस धरती पर मैं बोझ नहीं हूँ  
ये दुनिया को समझाओ ना पापा



## “मेरा प्रिय पक्षी-मोर”

संकलन -

आराध्या, कक्षा 3



दुनिया में एक से बढ़कर एक सुंदर पक्षी हैं। इन पक्षियों में मोर मुझे सबसे अधिक प्रिय है। मोर एक शानदार पक्षी है। उसके लंबे और रंग-बिरंगे पंख बहुत ही सुंदर लगते हैं। उसकी ऊंची गर्दन अपने नीलाभ रंग के कारण और भी सुंदर लगती है। उसके सिर पर सुंदर सी कल की मोर के लिए उचित मुकुट प्रतीत

होती है।

मोर बाग-बगीचों, नदियों के आसपास तथा जंगलों में रहता है। उसे हरियाली बहुत पसंद है। वर्षा ऋतु में आकाश में काले काले बादलों को देखकर मोर पंख फैलाकर खुशी से नाच उठता है तब उसकी सुंदरता और भी बढ़ जाती है।

सांप, मेंढक और चूहे आदि मोर का प्रिय आहार है। मोर खेत की फसल को चूहों से बचाता है, इसलिए किसानों का मित्र भी कहलाता है। मां शारदा के वाहन के रूप में

तथा भारत के राष्ट्रीय पक्षी के रूप में भी हम मोर को जानते हैं।

### सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

जन्म : सन् 1897 ई०

मृत्यु : 15 अक्टूबर, 1961 ई०

जन्म स्थान:

**बंगाल, महिषादल राज्य**

काव्य-रचनाएँ: 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'अपरा', 'बेला', 'नये पत्ते', 'आराधना', 'अर्चना' आदि



## “मेरे पापा”

डिंगंबर राघो  
पाटील, कक्षा 6



हर घर में होता है वो इंसान  
जिसे हम पापा कहते है।  
सभी की खुशियों का ध्यान रखते  
हर किसी की इच्छा पूरी करते  
खुद गरीब और बच्चों को अमीर  
बनाते  
जिसे हम पापा कहते है।  
बड़ों की सेवा भाई-बहनों से लगाव  
पत्नी को प्यार, बच्चों को दुलार  
जिसे हम पापा कहते है।  
खोलते सभी ख्वाहिशों के द्वार  
जिसे हम पापा कहते है।  
बेटी की शादी, बेटों को मकान  
बहुओं की खुशियां, दामाद का मान  
कुछ ऐसे ही सफर में  
गुजारे वह हर शाम  
जिसे हम पापा कहते है।

## मेरी शायरी

संकलन -  
कृष्णा कुरील,  
कक्षा - 7



1. फना होने की इज़ाजत ली  
नहीं जाती,  
ये वतन की मोहब्बत है जनाब  
पूछ के की नहीं जाती।
2. और भी खूबसूरत और भी  
ऊंचा  
मेरे देश का नाम हो जाये,  
काश कि हर हिंदू विवेकानंद  
और हर मुस्लिम कलाम हो  
जाये।
3. जश्र आज़ादी का मुबारक  
हो देश वालों को,  
फंदे से मोहब्बत थी वतन के  
मतवालो को।

“माँ”

धनश्री जगताप,  
कक्षा 9



धूप में छाया जैसे,  
प्यास में दरिया  
जैसे,

तन में जीवन जैसे,  
मन में दर्पण जैसे,  
हाथ दुआओं वाले रोशन करें  
उजाले,

फूल पर जैसे शबनम, सांस में  
जैसे सरगम,

प्रेम की मूरत, दया की सूरत,  
ऐसी और कहां है, जैसी मेरी मां  
है।

जब भी अंधेरा छा जाए,  
वह दीपक बन जाए,  
अंदर भले नीर बहाए, लेकिन बाहर  
मुस्कराए।

काया पावन सी, मथुरा वृंदावन  
जैसी,

जिसके दर्शन में हो भगवान, ऐसी  
और कहां है, जैसी मेरी मां है।

मां सूरज की पहली किरण हो तुम,  
कड़ी धूप में घनी छांव हो तुम,

ममता की जीवित मूरत हो तुम,  
आंखों से झलकाती प्यार हो तुम,  
प्यार का गहरा सागर हो तुम।

---\*\*\*---

कुछ न कुछ छूटना तो  
लाज़मी है।

संकलन - प्रीति  
सोज्वल,  
प्रशिक्षित स्नातक  
शिक्षिका, अंग्रेजी



अचानक से आज  
यूँ ही ख़याल आया कि,  
अख़बार पढ़ा तो प्राणायाम छूटा,  
प्राणायाम किया तो अख़बार छूटा,  
दोनों किये तो नाश्ता छूटा,  
सब जल्दी-जल्दी निबटाये  
तो आनंद छूटा,

मतलब.....

कुछ ना कुछ छूटना तो लाज़मी  
है....!!

जॉब देखो तो परिवार छूट जाता  
है,

और परिवार देखो तो जॉब छूट जाता है

और दोनों को छोड़ने की कल्पना मात्र से, लगता है कि रूह छूटी, बीवी और मां के बीच के भी कुछ ना कुछ छूट ही जाता है कुछ ना कुछ छूटना तो लाज़िमी है

हेल्दी खाया तो स्वाद छूटा, स्वाद का खाया तो हेल्थ छूटी, दोनों किये तो..... अब इस झंझट में कौन पड़े..!!

मुहब्बत की तो शादी टूटी, शादी की तो मुहब्बत छूटी दोनों किये तो वफ़ा छूटी, अब इस पचड़े में कौन पड़े..!!

मतलब

कुछ ना कुछ छूटना तो लाज़िमी है...!!!

जो जल्दी की तो सामान छूट गया, जो ना की तो ट्रेन छूट गयी, जो दोनों ना छूटे तो,



विदाई के वक़्त गले मिलना छूट गया, मतलब...

कुछ ना कुछ छूटना तो लाज़िमी है...!!!

औरों का सोचा तो मन का छूटा, मन का लिखा तो कहर टूटा, ख़ैर हमें क्या..

खुश हुए तो हँसाई छूटी, दुःखी हुए तो रुलायी छूट गयी, मतलब...

कुछ ना कुछ छूटना तो लाज़िमी है...!!!

इस छूटने में ही तो पाने की खुशी है,

जिसका कुछ नहीं छूटा,

वो इंसान नहीं मशीन है, इसलिये कुछ ना कुछ छूटना तो लाज़िमी है...!!!

जी लो जी भर कर क्योंकि एक दिन ये ज़िन्दगी छूटना भी लाज़िमी है.....

## “जीवन एक रसायन”

नीरज कलवानी,  
स्नातकोत्तर शिक्षक,  
रसायनशास्त्र



भांति-भांति के रंग इस जीवन में,  
हर रंग में एक रसायन है,  
बूझ सको तो बूझो जीवन,  
जीवन एक रसायन है ।  
खट्टी मीठी यादें जिसमें,  
अपने-पन की बाते इसमें,  
अलग-अलग सुर मिलते जिसमें,  
जीवन ऐसा गायन है ।  
बूझ सको तो बूझो जीवन,  
जीवन एक रसायन है ।  
सुख दुःख का आवर्त है जिसमें,  
सह संयोगी बंधन है अपनों का,  
मित्रों का मिश्रण भी इसमें,  
यौगिक रिश्तेदारों का,  
मीठा अनुभव सहयोगी का,  
और कड़वा कुछ गद्दारों का,  
सब को साथ में लेकर चलना  
यही तो जीवन यापन है  
बूझ सको तो बूझो जीवन,  
जीवन एक रसायन है ।

## सूर्यनमस्कार मंत्र



हरेश पाटील,  
कक्षा - 2

ॐ मित्राय नमः ।  
ॐ खगाय नमः ।  
ॐ आदित्याय नमः ।  
ॐ रवये नमः ।  
ॐ पूष्णे नमः ।  
ॐ सवित्रे नमः ।  
ॐ सूर्याय नमः ।  
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ।  
ॐ अर्काय नमः ।  
ॐ भानवे नमः ।  
ॐ मरीचये नमः ।  
ॐ भास्कराय नमः ।  
ॐ श्रीसवितृसूर्यनारायणाय नमः ।

## “सुंदर जीवन जीने के कुछ खास नियम”



- एकनाथ

सातव,

प्राथमिक शिक्षक

- 1) अपने माता- पिता और गुरु की बताई हुई बातों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।
- 2) समय का सदुपयोग करना सीखे, अपनी दिन भर के कार्यों की दिनचर्या बनानी चाहिए।
- 3) पाठ्यक्रम पर आधारित अपनी नोट्स बनाना सीखो। पठन-चिंतन और चिंतन इस क्रिया पर अवश्य ध्यान दें।
- 4) सुबह जल्दी उठकर ईश्वर को नमन करके अपनी पढ़ाई शुरू करनी चाहिए। हमारे आदर्शों के जीवन चरित्र पढ़ने चाहिए जिससे आपको प्रेरणा मिले।
- 5) हमेशा अपने चेहरे पर विनम्रता का भाव होना चाहिए एवं सभी से आदर और विनम्रता पूर्वक बात करनी चाहिए।

6) अपने माता - पिता को घर के कामों में मदद जरूर करनी चाहिए।

7) मित्रता हमेशा अच्छी संगत के लोगों के साथ करनी चाहिए।

8) अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उसे प्राप्त करने में चाहे कितनी भी समस्याएं आए आपको कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

### “कामयाबी”

- संतोष दादा पाटील,  
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक,  
हिंदी

डूबने की अब आदत-सी हो गई,  
तनहाई नसीब से जुड़ गई,  
वो एहसास भी अब कर गए  
किनारा,  
आरजू तुमसे मिलने की धुँधली-सी  
हो गई थी,  
जीते थे जिंदगी अश्कों का फ़रमान  
समझकर,  
ए-कामयाबी तू हमसे इतनी बेवफा  
हो गई थी।



“आगे बढ़ते जाएंगे”

गीतकार - संतोष कुमार बुनकर,

संगीत शिक्षक



सुन लो देश के प्यारों  
फिर वो दिन आयेंगे  
नील गगन में पंछी  
फिर सुर में गायेंगे  
आगे बढ़ें हैं आगे बढ़ेंगे  
आगे बढ़ते जायेंगे ।।

तपोभूमि है देश ये अपना  
सारे जहाँ से न्यारा है  
आसमान में विश्व पटल पर  
झंडा ऊँचा हमारा है

ये जो वतन है एक उपवन है  
इस उपवन को बचायेंगे ।।  
छोटी-मोटी मुसीबतें हैं  
आकर सब चली जायेंगी  
चलेंगे हम सब साथ-साथ तो  
ये विपदा टल जायेंगी  
हम है विजेता विश्वविजेता  
देखना हम कहलायेंगे ।।

नई रोशनी नई उमंगें  
नई सुबह फिर आयेगी

सूनी हैं जो डगर  
देश की  
फिर से मेले  
लगायेंगी  
खूब मिलेंगे फूल  
खिलेंगे  
तन- मन सब  
खिल जायेंगे ।।



---\*\*\*---

विश्व भाषा हिंदी - विश्व हिंदी  
दिवस के उपलक्ष्य में



संकलन  
समीर,  
कक्षा-10

भाषा मानव संप्रेषण का एक अप्रतिम साधन है। सामाजिक व्यवहार के विभिन्न रूपों और प्रकारों में भाषायी व्यवहार का एक प्रमुख स्थान है। अपने विविध व्यवहार - क्षेत्रों में भाषा प्रयोग की दृष्टि से कुछ भाषायी समुदाय एक भाषी होते हैं और कुछ समुदाय बहुभाषी। कई भाषायी समाज ऐसे हैं जो विशिष्ट प्रयोग-क्षेत्रों के लिए अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग करते हैं। अपनी भाषा से इतर भाषाओं का विशिष्ट प्रयोग-क्षेत्रों में उपयोग प्रायः ऐसे समाजों में होता है जो समाज अथवा देश स्वाधीन नहीं होते और जहाँ शासक वर्ग अपनी भाषाएं उन पर प्रशासनिक कार्यों के लिए अथवा अन्य निश्चित

कार्यों के लिए थोपता है। स्वाधीनता से पूर्व अपने देश में भी ऐसी ही स्थिति रही है जिसमें भारतीय भाषाओं को जीवन के विविध प्रयोग- क्षेत्रों में प्रयोग में प्रयुक्त होने और विकसित होने का अवसर नहीं दिया गया एवं शिक्षा, ज्ञान- विज्ञान, प्रशासन, वाणिज्य तथा व्यापार आदि में अंग्रेजी का ही प्रयोग किया जाता रहा। स्वाधीनता के उपरांत भारतीय भाषाओं का शिक्षा, प्रशासन तथा जनसंपर्क के विविध माध्यमों में प्रयोग किए जाने का निश्चय किया गया और इसलिए इन भाषाओं का सुनियोजित विकास करने का भी निश्चय किया गया। सर्वाधिक भारतीयों की भाषा होने के नाते हिंदी को केंद्रीय सरकार की राजभाषा का स्थान भी मिला। धीरे-धीरे हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय फलक पर भी पहचान मिलने लगी।

विश्व हिन्दी दिवस क्यों मनाया जाता है-

हर साल 10 जनवरी के दिन विश्वभर में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। पहला विश्व हिन्दी दिवस वर्ष 2006 में मनाया गया था। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करना है। विदेशों में भारत के दूतावासों में इस दिन को विशेष रूप से आयोजित किया जाता है। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं। विश्व में हिन्दी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था इसीलिए इस दिन को 'विश्व हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय फलक पर हिन्दी की बढ़ती स्वीकार्यता को इन बिंदुओं से समझा जा सकता है-

- संयुक्त राष्ट्र ने भी हिन्दी में वेबसाइट बनाई है और हिन्दी में रेडियो प्रसारण भी शुरू किया है।
- अमेरिका से हर सप्ताह विदेश विभाग की ओर से समसामयिक मुद्दों पर हिन्दी में संवाद किया जाता है।
- भारत स्थित अमेरिकी दूतावास से हिंदी की मैगज़ीन स्पैन प्रकाशित की जाती है।
- विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण किया जाता है। इसके लिए हिन्दी चेयर्स की भी स्थापना की गई है।
- अमेज़न, फेसबुक, गूगल जैसी विदेशी कंपनियों ने भी हिन्दी के महत्व को स्वीकार किया है।
- चीन सरकार ने भी हिन्दी में वेबसाइट बनाई है और हिन्दी में रेडियो प्रसारण भी शुरू किया है।
- विश्व भर में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में पसंद किया जा रहा है।

- विश्व की प्रमुख भाषाओं के साहित्य का हिन्दी में अनुवाद हो रहा है और साथ ही हिन्दी साहित्य का अनुवाद विदेशी भाषाओं में हो रहा है।
- भारत का नमस्ते शब्द पूरी दुनिया में मशहूर है।
- विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दी सोसायटी, हिन्दी संस्थाओं का निर्माण हो रहा है।
- विश्व के कई देशों में स्कूलों के पाठ्यक्रम में भी हिन्दी पढ़ाई जा रही है।
- आज विश्व भर में कई पत्र पत्रिकाएं, बेवसाइट तथा ब्लॉग्स हैं, जो हिन्दी भाषी होकर हिन्दी का प्रचार प्रसार बखूबी कर रहे हैं।
- हर वर्ष विश्व के अलग-अलग देशों में विश्व हिन्दी सम्मेलन मनाया जाता है।
- विश्व के कई देश अपने यहां हिन्दी शिक्षण के लिए अलग से धनराशि निर्धारित करते हैं।
- यूनिकोड और हिंदी कम्प्यूटिंग के क्षेत्र में विकास होना हिन्दी की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता की पहचान

है।

- हिन्दी मशीन अनुवाद को लेकर भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोशिशें चल रही हैं।
- ऑक्सफॉर्ड, सेज़ जैसे विश्व के विख्यात प्रकाशकों ने अपने हिन्दी प्रकाशनों का भी शुभारंभ किया है।
- विश्व भर में मनोरंजन जगत में हिन्दी का बहुत उपयोग हो रहा है इसके लिए हिन्दी में सबटाइटलिंग, डबिंग, वॉयस ओवर, कंटेन्ट राइटिंग, फिल्म पटकथा लेखन, एनिमेशन फिल्म आदि जैसी तकनीकों का सहारा लिया जा रहा है।
- विश्वभर में भारतीय हिन्दी सिनेमा की अपनी एक पहचान है।
- भारत के नेताओं और राजनयिकों द्वारा विश्व पटल पर हिन्दी में भाषण दिया जाता है। जब हम विश्व पटल पर खड़े होकर देखते हैं तो पाते हैं कि विगत कुछ वर्षों से हिन्दी का वैश्विक मंच विशाल और समृद्ध होता जा रहा है। भारत का संयुक्त राष्ट्र - संघ में हिन्दी की स्थापना का प्रयास,

विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन आदि ऐसे कार्य हैं जिससे हिन्दी की वैश्विक क्षमता सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

अब हिन्दी एकदेशीय नहीं अपितु बहुदेशीय भाषा का रूप ले चुकी है। आज रूस, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, इटली, बेल्जियम, फ्रांस, चैकोस्लोवाकिया, रूमानिया, चीन, जापान, नार्वे, स्वीडन, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, मैक्सिको, मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, कीनिया, ट्रिनीटाड - टुबैगो, बर्मा, थाईलैण्ड, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों में हिन्दी भाषी रहने लगे हैं।

सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी फादर कामिल बुल्के के तत्कालीन कथन पर दृष्टिपात हमें वर्तमान समय में जागरूकता की प्रेरणा बन सकता है।

उन्होंने कहा था “हिन्दी भाषा इतनी समृद्ध, सक्षम और सरल है कि हमारा सारा कामकाज सुचारु रूप से हिन्दी में किया जा सकता है।

यह खेद की बात है कि हिन्दी भाषियों में भाषा के प्रति स्वाभिमान नहीं जगा, अन्यथा बहुत पहले हिन्दी देशव्यापी स्तर पर प्रचलित हो गई होती। अचानक ही हिन्दी में कामकाज होना शुरू होने पर कुछ कठिनाइयां होना स्वाभाविक हैं। क्रमशः इनका निराकरण सम्भव हो सकता है। जब मैं बेल्जियम से भारत आया था तो भारतीय जनता में अपनी भाषा के प्रति घोर उपेक्षा पाई। यह देख कर मैंने हिन्दी पढ़ने का संकल्प लिया। मैंने निश्चय किया कि हिन्दी की सेवा करूंगा। भारत में संस्कृत मां है, हिन्दी ग्रहणी और अंग्रेजी नौकरानी। इस तथ्य को कोई स्वाभिमानि भारतीय कैसे भुला सकता है?”

---\*\*\*---



## महर्षि वेदव्यास जी का परिचय



संकलन जोत्सना  
पाटील,  
कक्षा -7

महर्षि वेदव्यास का जन्म आषाढ़ पौर्णिमा को लगभग ३००० हजार ई. पूर्व में हुआ था उनके सन्मान में ही हरवर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरुपूर्णिमा कहा जाता है।

महर्षि वेदव्यास की प्रमुख रचनाएं

- |              |                |
|--------------|----------------|
| १. महाभारत   | २. भगवतगीता    |
| ३. शांतिपर्व | ४. द्रोणपर्व   |
| ५. मौसलापर्व | ६. अनुशासनपर्व |

७. वीरतापर्व

८. सभापर्व

९. स्वर्गारोहणपर्व

१०. स्त्रीपर्व

११. कर्णपर्व

१२. महाप्रस्तनिकपर्व

१३. सौप्तिकपर्व

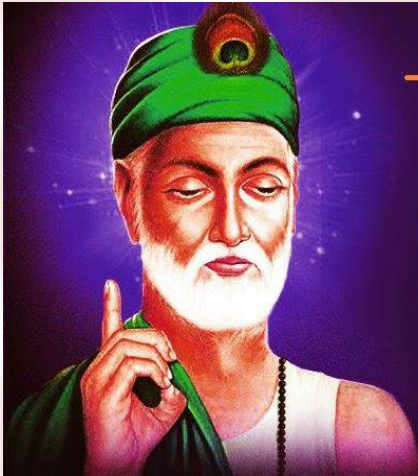
१४. आश्रमवासिकापर्व

१५. अश्वमेधिकपर्व

१६. देवीभागवता १,२

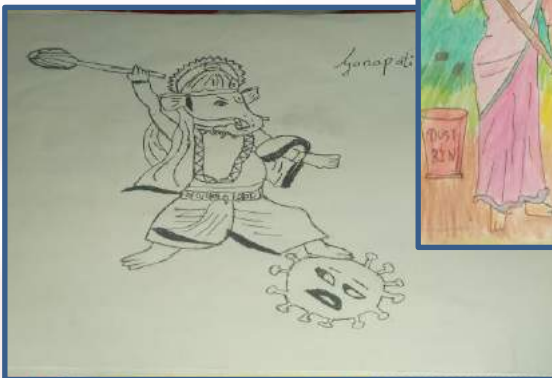


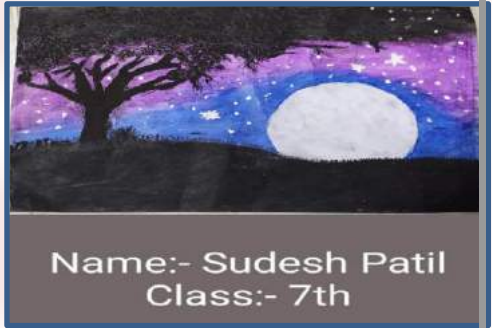
## कबीर दास



कबीर दास का जन्म सम्वत् 1455 (सन् 1398 ई.) में हुआ था। जनश्रुति के अनुसार उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ जिसने लोकताज के भय से उन्हें त्याग दिया। एक जुलाहा दम्पति को वे लहरतारा नामक तालाब के किनारे पड़े हुए मिले जिसने उनका पालन-पोषण किया। वे ही कबीर के माता-पिता कहलाए। इनके नाम थे नीमा और नीरू। कबीर की मृत्यु 120 वर्ष की आयु में सम्वत् 1575 (1518 ई.) में मगहर में हुई थी।







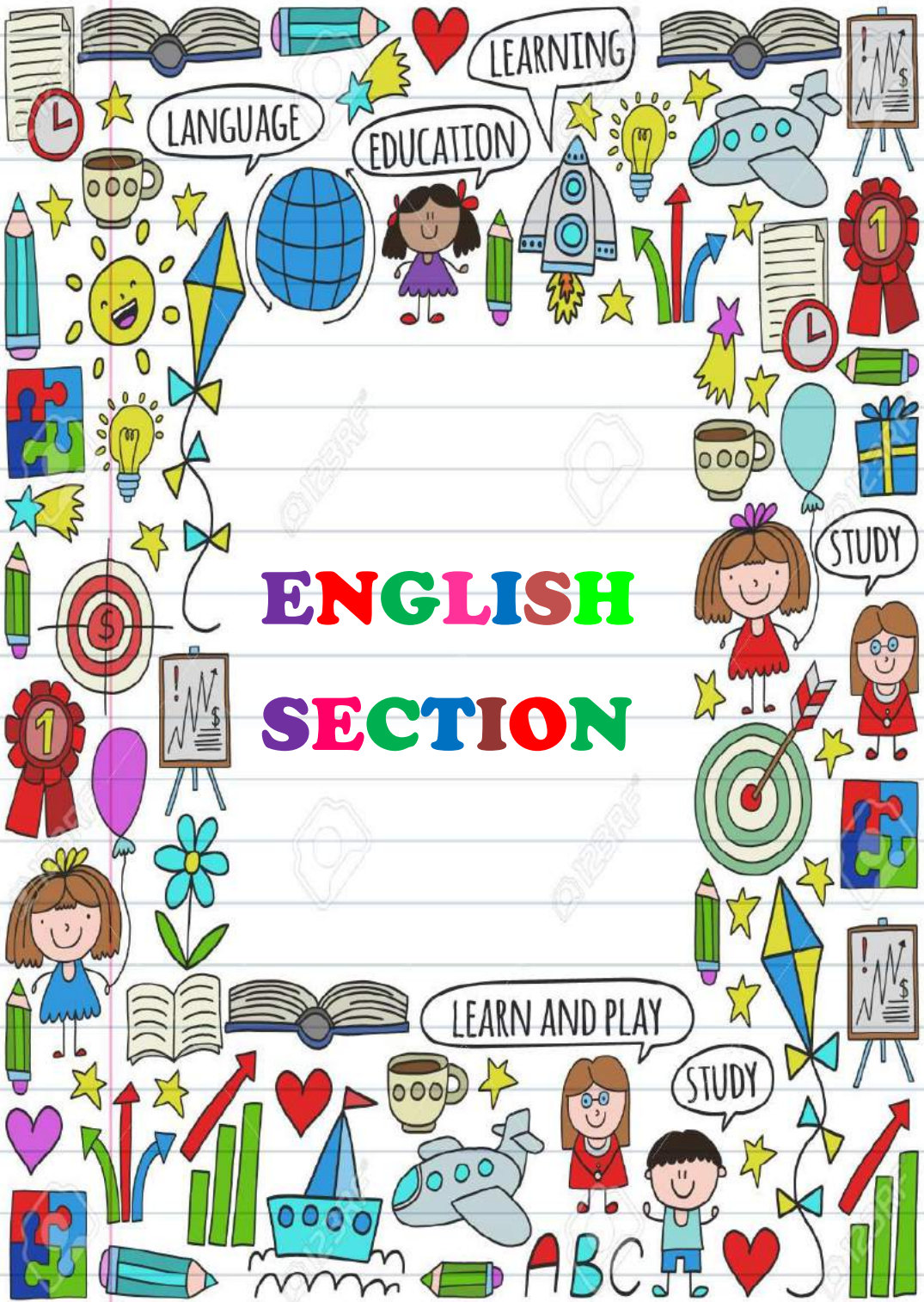
Name:- Sudesh Patil  
Class:- 7th







# ENGLISH SECTION



## BEAUTIFUL THOUGHTS AND QUOTES



**Advitiya Patil,  
School  
Captain,  
Class 12**

Kendriya

Vidyalaya Sangathan is world's largest chain of school. And we Kvians are proud to a part of this organisation. KVS which was established on 15<sup>th</sup> of December, 1963, currently has 1245 schools in India and three abroad. KVS is an autonomous body that comes under Ministry of Education, Government of India.

KVS has been a pioneer for proliferation of knowledge, it has educated many generations and is still active in cultivating future generations of our country. KVS not only just focus on academics but gives significance to all round development of all the students, thus making them

responsible citizens in the long run. And so does our school.

KV, NMU, Jalgaon, a branch of KV situated on the outskirts of Jalgaon city in the NMU campus is now celebrating its silver jubilee on completing 25 glorious years. The school began its journey in 1996 with strength of 120 students under the guidance of Honourable Principal Shri. R. K. Lale who is now the Honourable Assistant Commissioner, Mumbai Region, now and the school has strength of over 660 students and is embarking towards the 26<sup>th</sup> year lead by Honourable Principal Mr. Matthew Abraham.

Being a student at KV, NMU, Jalgaon for over 12 years now, I have seen the school grow and flourish in front of my own eyes, I came as an innocent kid but will depart as a responsible girl, I spent the most important phase of my life in the school's building with my friends, under the love, care and support of my teachers and with the guidance

of our Principal sir. With all these years I saw myself progressing and making a way towards my goals. And all this was possible because of my school, KV, NMU, Jalgaon.

KV, NMU, Jalgaon with its excellence in both academics and CCA is one of the finest schools in Jalgaon. The school provides the students with the outstanding teachers, best infrastructure and a unparalleled education system which maintains the balance between overall as well as individual development of each and every student.

Even in the COVID-19 pandemic with our teachers' hard work, respected Principal's lead and with the cooperation by students and parents, online classes are accepted as new normal and are continued. We celebrated several events like- teachers day, Independence Day, sports day, annual panel inspection and many more, on digital platform which gave students an golden opportunity to

showcase their talent from the comfort of their homes. The school is active on various social media platforms with two YouTube channels running which are filled with videos of student's creativity.

Being the School Captain for the session 2020-21 was a priceless opportunity which gave me an exclusive experience of representing the school, connecting and interacting with different people, and everything from my home. All this inculcated a sense of responsibility and duty that I had towards my school.

A school is just a building but with the students and teachers it is a temple of knowledge.

I would like to thank my teachers and Principal sir for all their hard efforts and would like to wish my fellow juniors luck for the coming year.

**Thank You!**  
**Advitiya Patil**  
**School Captain**  
**Class XII**



## KNOWN- UNKNOWN



**Mansi  
Bhavsar,  
Class: 12**

Hustling with all others,  
Today I sit and write,  
The two modes I keep  
switching between,  
I can and cannot  
describe.

The struggle is  
real,  
To know and not  
to know at all,  
Knowing creates  
confusion,  
Also a doubt so far.

It's ok not to know everything,  
But what is already known  
Needs to be known by you,  
But knowing it too is  
frustrating,  
Because, what's next you don't  
have a clue.

The beauty of not knowing  
exists,  
All you need to do is  
Just keep going with the flow,  
What's meant to be?



Will be definitely known.  
Imagine you never knew  
anything. Or what if you know  
everything? Both have their  
own consequences. To know  
everything might leave you  
empty, nothing to bother  
about, nothing to explore, just  
a piece of stone. And not to  
know anything might leave  
you clueless. But we humans  
are somewhere in between half  
things are known, half  
unknown. Everything  
is at its midway the  
scientific theories,  
philosophical theories,  
as well as you. You  
don't know who you  
are. You don't know  
what you are or what  
you are going to be. Don't  
know if anyone else  
encounters the same thoughts  
or not. But I guess everyone  
might have at least once  
thought about what they know  
and what they don't. I was just  
thinking- what if we stop  
discovering? What if we stop  
trying to know about the  
unknown? Will it lead us to  
peace? Or we'll miss out  
something?

\*\*\*\_\*\*

## CICADA 3301: THE INTERNET MYSTERY



**Tilak  
Varma,  
Class – 12**

On 4th January 2012, the hardest puzzle on the internet was born named “Cicada 3301”. It is believed to be the most “elaborated and mysterious puzzle of the internet age“.

The name Cicada 3301 is given to a mysterious organization that has thrice posted

sets of puzzles to recruit the fastest and intelligent code breakers from all over the world. This puzzle was initially posted on sites like Reedit and 4chan and ran for nearly a month. The puzzle stated:



“Hello, we are looking for highly intelligent individuals. To find them we have devised a test. There is a message hidden in this image. Find it, and it will lead you on the road to us. We look forward to meeting the few that will make it all the way through. Good luck 3301”.

Unlike a normal puzzle, Cicada 3301 prepares the most unique and difficult type of clues that no individual could

solve without proper knowledge about various important concepts of

computer science. The participants are expected to have deep knowledge regarding: Coding, Cryptography, Encryption, Steganography, etc. The types of clues and facts about Cicada 3301 are as follows:

-An image was given. After opening the image in a text-only editor WordPad, the participants realized that an encrypted message was given that had to be deciphered using the Caesar Cipher decoding method. The clue later led to a URL.

-Some clues led to Mayan numerals, a confused mixture of letters, book codes, King Arthur and the Holy Grail and images.

-After solving these clues, led the participants to a phone number that directed them to the next clue where they were given an image with a couple of prime numbers hidden in it. Participants were asked to find the other two prime numbers, multiply those numbers together, and add a domain to it.

The URL later led to a picture of a Cicada on the screen and a countdown was set that would expire in three days.

After the three days countdown, the website revealed 14 GPS coordinates across the world of the locations that included Warsaw, Seoul, Paris, Sydney, Hawaii, Miami, New Orleans, and Seattle.

-After visiting the locations of the given GPS coordinates, the participants found flyers taped to a streetlight with an image of Cicada and a QR code.

-The QR codes after scanning linked to new URLs which featured lines from the William Gibson poem “Agrippa (A Book of the Dead).” It led to a Tor browser. Clues led to the dark web too.

-After a month of conducting this insanely complicated worldwide scavenger hunt, the creators of Cicada 3301 left the following message on 4Chan:

“We have now found the individuals we sought. Thus

our month-long journey ends. You are undoubtedly wondering what it is that we do we are much like a think tank in that our primary focus is on researching and developing techniques to aid the ideas we advocate liberty privacy security.

**God Bless...**



**Pranjal Patil,  
Class – 3**

God bless my country,  
God bless my leaders,  
God bless my teachers,  
Help me always (2),  
To make them happy  
God bless my mummy  
God bless my daddy  
God bless my neighbours  
Help me always (2),  
to make them happy.



**MASK**

**Aislinn  
Shaikh,  
Class 7**

I wear a cage upon my mouth  
Commonly known as, MASK!

It feels more confined than  
living in the, COFFIN  
But safer then been on a  
VENTILATOR!

I would love to breathe freely!  
But at the same time,  
I would hate to be in an ICU!

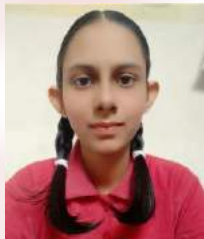
I want to show people my  
smile!  
But keep it safe too!

I hate to stay in my house all  
day,  
But also think of the protection  
from COVID-19.

I would rather prefer the smell  
of SANITIZER!  
Then of a CORPSE.

I have so many COMPLAIN!  
But I am also aware that the  
safest thing in the world now,  
Are those?  
MASK and SANITIZER

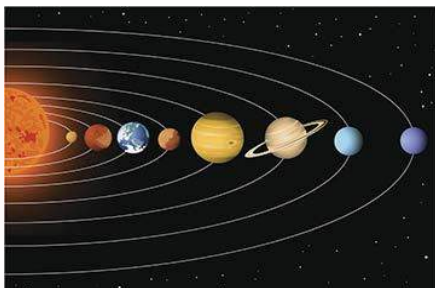
## MUniverse



**Anjali  
Chaudhari,  
Class – 11**

The multiverse is a hypothetical group of multiple universes. This universe is to get the comprise everything that exist space, time, matter, energy, information, physical laws and their constants. It is also called as 'parallel universes', 'alternate universes'.

This idea of infinite worlds was present in the philosophy



of ancient Greek atomism. It's proposed that "Infinite parallel worlds arose from the collision of atoms." This concept became more defined in the Middle Ages.

Multiple universes have been hypothesized in Cosmology, Physics, astronomy, religion,

philosophy, transpersonal psychology, and music, literature, particularly in science fiction, comic books and fantasy.

Around 2010 many scientist analysed data to find evidence suggesting that our universe collided with are there parallel universes collided in the distant past. However, IMO through analysis of data did not survive any statistical and significant evidence for any such collision.

Multiverse of a somewhat different kind has been envisaged within string theory and its higher dimensional extension, M-theory.

Possible worlds are a way of explaining probability and hypothetical statements. Some philosophers believe that all possible worlds exist and that they are just real as the world we live in.

## Human Life during the Pandemic



**Mihir Patil,  
Class 11**

COVID-19 has heightened human suffering, undermined the economy, turned the lives of billions of people around the globe upside down, and significantly affected the health, economic, environmental and social domains.

People faced many problems during the pandemic.

Labourers were not able to get work, to earn their living. Many employers were unemployed.

After this all, even those who were doing work from home are facing problems. One of the biggest problems faced by remote-workers is mental health. With the number of

people struggling in silence, rising companies need to promote positive mental health amongst employees working remotely and offer support to those in need.

Due to pandemic, the schools colleges and offices are taken online, which is another obstacle for students and office workers. The online education is new for students, so they find it difficult to understand. This is not good for their studies. Students are continuously complaining about this. The main hurdle for the online work is poor

Internet connection. The students and people living in village or rural areas are not able to get proper

connections. Online studies require mobile or laptop or computer. So it increases screen timing which leads to





Physical strain to your eyes and body.

It also has many positive impacts on people. One of the biggest impacts is that, it helps you build genuine relationships. You get to spend your time with your family and plan your work better. This actually helps you build a better future for both your work and family.

Secondly, being hygienic is no longer just a good habit, but the very skill you need for survival. From shaking hands to namaste, we all have had a lifestyle change for the good. We're going to remember to cover your mouths when we cough, to sanitize our hands after touching anything else because we know what can happen if we don't.

It reduced percentage of pollution in air, which is superior for environment. Alongside the reduction in pollution, clearer waters have also been spotted in locations

across the globe. Carbon emissions are set to decrease by 8% in 2020 as the pandemic causes the biggest shock to the global energy system in over 70 years, according to the International Energy Agency.

Keep calm, Stay healthy and beat corona.

---\*\*\*---

## WHAT I WANT IN MY LIFE



**Haresh  
Megharaj  
Patil,  
Class 2<sup>nd</sup>**

I want to live my

Life without **Stress**

and **Worries**

I don't need to be **Rich**

and **Famous**, I just want

To be **Happy**

## Some interesting facts about Japanese language



**Srujan R.  
Bhagwat,  
Class – 6**

Japan uses three writing systems:

- These three writing systems are the native

Japanese alphabets

Hiragana and

Katakana and the

Chinese characters

called

Kanji. The three writing systems are used together, sometimes even within the same sentence. Kanji is paired with Hiragana to form words and sentences, while Katakana is used for foreign loanwords as well as to add emphasis.

Even though Japanese uses Chinese characters, the

language isn't based on Chinese:

- The Japanese written language uses Chinese characters, but the language itself was born in Japan, not China. Well, the Japanese language existed for centuries solely as an oral language that wasn't written down. Sometime around the 5th century,

Japanese scholars

decided to fix that by learning to read classical Chinese and borrowing

Kanji characters to pair with the corresponding words in Japanese.

There are no plurals in Japanese:

- In the Japanese language there's no difference between saying 'There is a spider' and 'There are spiders.' So it can be difficult

夢 Dream	風 Wind	火 Fire	水 Water	心 Heart	勇 Courage	美 Beauty
雨 Rain	雪 Snow	宝 Treasure	金 Gold	花 Flower	星 Star	死 Death
猫 Cat	犬 Dog	日 Sun	月 Moon	愛 Love	秋 Autumn	夏 Summer
考 Think	強 Strength	空 Sky	朝 Morning	夜 Night	冬 Winter	春 Spring

to tell whether someone is saying there's a spider in your room, or your house has been overrun with a swarm of spiders.

There are also no articles:

- Japanese also doesn't differentiate between 'a', 'an', and 'the'. While this doesn't cause so many problems for English speakers of Japanese, it's a language point that's tricky for Japanese speakers of English.

You can make sentences using only verbs:

- While English sentences typically follow a subject-verb-object (SVO) word order, Japanese uses subject-object-verb (SOV) order. However, it's not actually necessary to specify the subject – and objects are optional, just as in English – so it's possible to form a sentence using only verbs.

---\*\*\*---



## Purpose

**Manasi  
Bhavsar,  
Class 12<sup>th</sup>**

Once upon a time there lived a man. So wise that anything he can grant the men of the suburb came to him Ask for advice and so they praised him.

Life was going on and he was contented, the only strain he had was his son being so lame, So inert and always used to procrastinate, ignore everything and never obey. The man now grew old and was upset, 'There is a treasure hidden' to his son he said, with the map and seasonal clothes the son now set for the probe.

On his way to the destiny he experienced life, Met felons and those with breezy eyes, some provided food some tried to rob. But after a year he reached the stop. He kept digging there for two days

found nothing and then became pale, on the way back home again experienced life But this time he fought like a trained knight.

Came home and saw his father, asked for forgiveness because he had no precious metals. 'There was no such treasure' his father replied all I wanted was you to encounter life. Heart, mind, soul and body forms it

We keep seeking for destiny but the journey describes it.

## My Mother

**BY – Pallavi, Class 11**

My mother is not just a normal person of my life, she is the reason why I am alive and survive. My mother is always there for me whenever I need, she is the one who taught me how to read and write. She has been always there to guide the way; she is always ready to help me every single day.



## DREAMS

**Anjali  
Chaudhari,  
Class 11<sup>th</sup>**

What are Dreams?

Dreams are sometimes fantasy and nightmares.

Dreams are sometimes cherished aspirations.

Dreams are sometimes hope and wish.

Dreams are sometimes desires and illusions.

Dreams are sometimes reason you're sleepless.

Dreams can sometimes take you to heights.

Dreams can sometimes drop you to grounds.

But take care your dreams don't change into desires.

Else, it will lead you to sadness and destruction.

## Famous Mathematicians of India



Compiled by-  
Miss.Meenal  
Kasar,  
TGT Maths

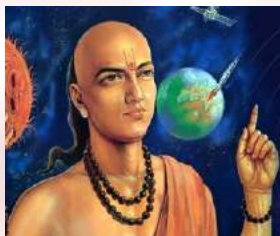
1. **Aryabhata** : He is very famous for the discovery of 'Zero'. In 5<sup>th</sup> century he gave the principle that the Earth is spherical and it revolves around the Sun in 365 days. In honour of him the first satellite of India was named as 'Aryabhata'. His notable work was 'Aryabhatiya'.

2. **Shrinivas Ramanujan**: He is considered as one of the famous mathematician of modern era. He worked for Analytical theory of numbers, Analytical

function and infinite series. Once he failed in English in school, resulting that he left the school and dedicated his life for Mathematics.

3. **Shakuntala Devi**: She was born in Bengaluru. She was a born Mathematician. At the age of 6 she presented her talent in front of thousands of people at various Universities. She was known as "Human Computer".

4. **C R Rao**: He is very famous for "Estimation Theory". He pursued M.A. in Mathematics from Andhra University and secured Gold medal in statistics from Calcutta University. He wrote 14 books.



## How to increase Brain Power?



**Mr. Ugrasen  
Singh,  
TGT P&HE**

There are certain ways by following g of them we can increase our brain power. But what is brain power exactly? is it some super power or to become some sort of chacha chaudhary? To anwer this I want to0 tell you that brain power is nothing but doing small things with more focus and attention. Being live in present is nothing more than that. It is may be simple to hear but by following of these things can make you really outstanding with over the period of time. There are certain ways by following of that we can enhance our functioning of neurons; Lets discuss on each segment:

### **Sound sleep**

**Daily exercise**

**Healthy diet**

**Stress free**

### **Sound sleep**

Sleep makes you feel better, but its importance goes way beyond just boosting your mood or banishing under-eye circles. Adequate sleep is a



key part of a healthy lifestyle, and can benefit your heart, weight, mind, and more. Too much or too little sleep is associated with a shorter lifespan—although it's not clear if it's a cause or effect. (Illnesses may affect sleep patterns too.) It's



recommended that they take at least eight hours sleep for a good health. Sleep can be defined as a natural state that the human mind and body get some rest.

### **Daily exercise**

You've taken to heart recommendations to get at least 150 minutes of moderate-intensity aerobic physical activity a week to improve your physical fitness. What you might not realize is that with every step you take, every mile you pedal or every lap you swim around the pool, you're enhancing your cognitive fitness.

So, what should you do? Start exercising! We don't know exactly which exercise is best. Almost all of the research has looked at walking, including the latest study. "It's likely that other forms of aerobic exercise that get your heart pumping might yield similar benefits," says Dr. McGinnis. How much exercise is required

to improve memory? These study participants walked briskly for one hour, twice a week. That's 120 minutes of moderate intensity exercise a week.

Standard recommendations advise half an hour of moderate physical activity most days of the week, or 150 minutes a week.

### **Healthy diet**

A healthy, balanced diet is important for brain development and function. While getting the right nutrients is important for your brain at any age, it is critical for infants and children who are still forming their brain and nervous system. It has not yet been determined if diet affects intelligence, but memory and other brain functions are affected by diet. A daily diet that contains excess unhealthy fats and sugars can impair brain development and function. Omega 3 fatty acids, green leafy vegetables, appropriate

protein and seasonal fruits are some good source for brain health.

### **Stress free**

Stress can be bad for your brain, in terms of both mental and cognitive health. Chronic stress can result in changes to nerve structure, and even nerve death. Stress may therefore accelerate the process of brain degeneration that eventually leads to dementia, including Alzheimer's disease. In one study, there was a 65% increased risk of developing dementia from high stress levels. Levels of the stress hormone cortisol naturally follow a circadian rhythm, rising rapidly after waking, falling during the day, before dropping to lowest levels in the middle of the night. Higher production of cortisol has a number of effects, including increasing availability of glucose in order to ready the body for action, in other

words, to facilitate the 'fight or flight' response. As well as increasing the body's readiness for action, cortisol suppresses processes that are not needed immediately e.g., the demanding immune system. This is why stress can increase susceptibility to coughs and colds. To ensure you keep your brain and mind healthy, a holistic approach must therefore be taken. Diet should be a key priority, making sure that you are consuming the correct nutrients from good food sources, and supplementing to cover any shortcomings.

So, we can conclude here that in order get optimum level of our brain functioning we need to give attention on all above segments, it required self-discipline and consistency to all activities to get maximum benefit, a small contribution with consistency can give you huge compounding benefits.

---\*\*\*---

# BLACK HOLE

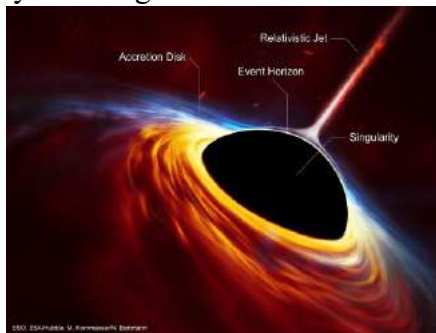


**Vrushal Patil,**

**Class 12**

Black Holes are celestial bodies which comprise of two phenomena of physics “Light and Gravitation”, and a celestial body “Star”.

Stars are massive entities in space which are comprised of dust clouds of hydrogen and helium. Stars are formed from nebula which is also called the birthplace of stars and nursery stars. They have an enormous amount of heat and light energy which forms due to fusion due to the fusion of hydrogen atoms which result in the formation of helium. Helium has a plasma state of matter so it has highly charged particles.



Gravitation (not gravity we experience on earth) is a phenomenon discovered by Sir Isaac Newton in year 1763. It is a force exerted by each and every object in-universe. It is expressed by a very famous equation

“Force=  $G*M*m/d^2$  (where G is universal constant M is mass of first body m is mass of second object and d is the distance between them) given by the same scientist.

Light is not a new phenomenon. There were many conflicts among scientists about what is light. Latest theories tell that light is a wave. Light is electromagnetic radiation within the properties of the electromagnetic spectrum that can be perceived by our eyes. Visible lights have wavelengths in the range of 400-700 nm. Though light is a

wave it also has a particle-like side comprising photons.

Black holes are entities in space that are one of the densest objects in space. They have a very high gravitational pull that not even light can escape from it. The gravitation of black hole attracts very less dense photons due to which light can't escape from black holes, as a result, we can't see black holes with normal eyes for that we need special thermal cameras.

Black holes are also called dark stars because they are formed when a star dies. Stars live billions of years and when their fuel (hydrogen) comes at the end they expand summing up everything present nearby inside and explodes giving enormous energy and enormous gravitational pull. Black holes are present in various sizes. Stars closest to black hole act differently than those away.

---\*\*\*---

## Fly and Fly



**Shravani  
Puranik,  
Class 6**

I am born with Potential,

I am born with Idea,

I am born with Greatness,

I am born with Courage,

I will defer the problem  
and succeed;

I am not for Crawling,

Because I will fly.



## Amazing Facts



**Harshal  
Patil, 11<sup>th</sup>**

1. To tell a real diamond from a fake, you need to breathe on it; a fake one will become foggy, and a genuine one will stay clear.
2. A cockroach can live a few weeks without its head. It will eventually die of hunger.
3. Galileo Galilee's middle finger is stored in the museum of science in Florence.
4. The iPhone, the Harry Potter books and the Rubik's cube are the top 3 most sold products in human history.
5. The Pokémon hitmonlee and hitmonchan were named after Bruce Lee and Jackie Chan.
6. 99% microbes that live inside humans are unknown to science.
7. When you take a hot bath, you burn as many calories as you would if you went for a 30 minutes' walk.
8. If you make ice cubes with tap water they will be white.
9. You spent so little electricity charging your smartphone that even if you calculated the yearly cost of it, it would be less than \$1.
10. All the ants on the earth weigh about as much as all the humans.





# गतिविधियाँ

dreamstime.

# Activities

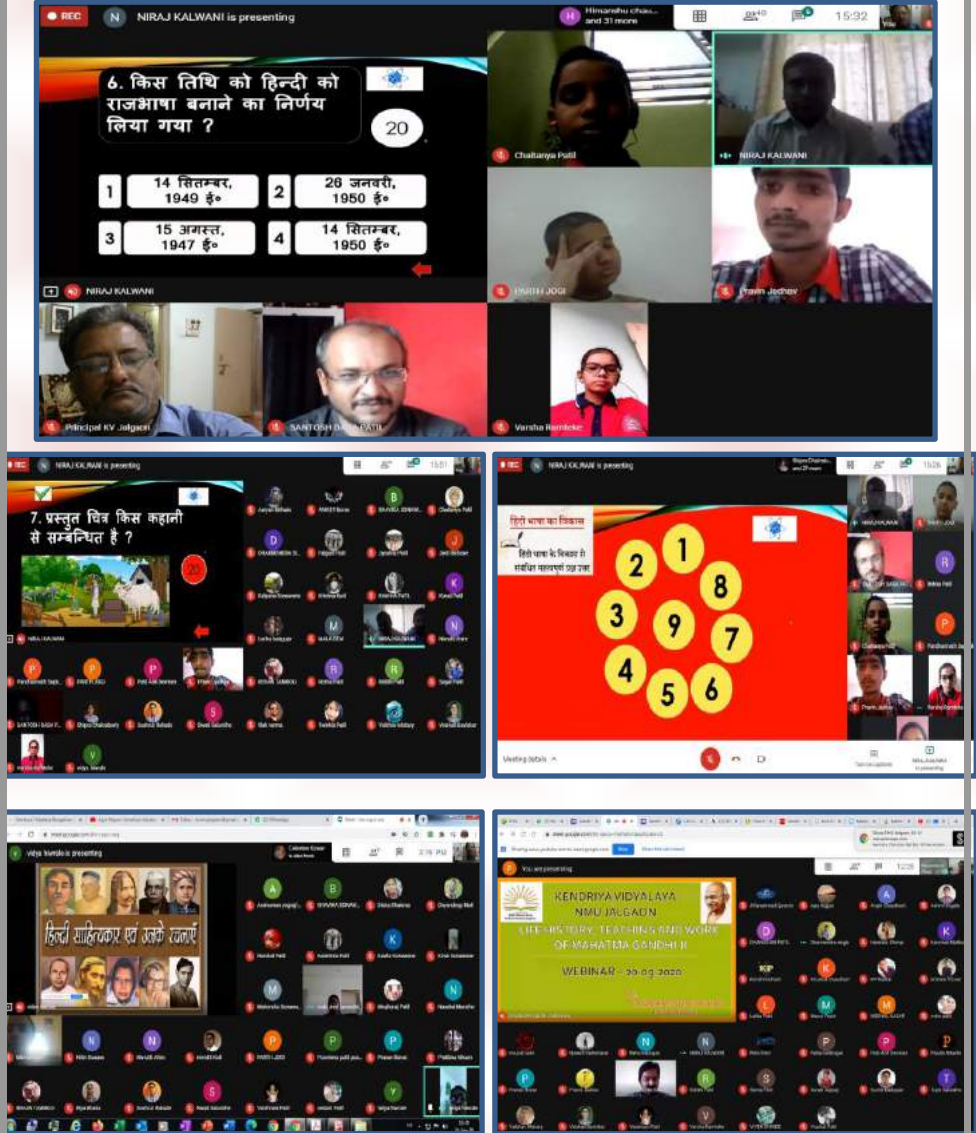


# ऑनलाइन गतिविधियाँ



इस वर्ष ऑनलाइन माध्यम से संपन्न विभिन्न गतिविधियाँ

# हिंदी पखवाड़ा — 2020



हिंदी पखवाड़ा का आयोजन ...14 से 28 सितंबर 2020 के बीच

# कलात्मक विचारों की अभिव्यक्ति

## वृक्षाः

वृक्षान् सर्वे वृक्षपुराणम् ।  
 विद्याम् तेषां वृक्षादिपुत्रम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।  
 वृक्षाणां तु सुन्दरम् वानं वृक्षं वृक्षम् ।

धनश्री विजय जगताप  
 कक्षा-9

## हिंदी कविता

आँसुओं की बिरहान बनकर,  
 वान जीवन अनादल शिवाक!

बादलबाद फूल-सा बिलकर,  
 गदकाँ ज़ोर मारकान शिवाक!

निन जल-रेणक आकाश लेकर,  
 तवर 'मन' प्रला 'कनका' शिवाक!

अनिन ज्ञान का धन होने देकर,  
 खुशियाँ 'शुन' मनाता शिवाक!

पाप व ज्ञानन से दूखे को,  
 माफिक 'शुन' मिथान शिवाक!

दुःख के लिए सर मिलने को,  
 अनिदानी सर मिलत शिवाक!

## सुविचार

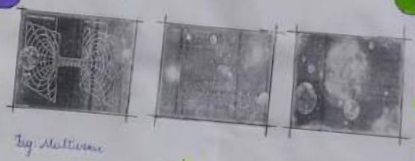
- 1) सफलता की कुंजी अगर जिंदगी में कुछ पाना हो, तो तारीफ़ बदलो उपाय नही.
- 2) दोस्तों भी किसी दक़्त से कम नहीं होते हैं... हर तक़्त में ताक़त भी होते हैं....
- 3) अगर हम हमारी जिन्दगी सिर्फ़ कल के बोले में जीवने में निकाल देंगे तो हम हमारी जिंदगी के अहम पल्लो को ग़ी पानेंगे।
- 4) ना अंघर, ना तक़लीक़... तो क्या मजा है जीने में बड़े-बड़े तक़ल धन जाते हैं जब आग़ लगी हो जीने में....!!

Name- Bhavika Sonawane  
 Class- 7<sup>th</sup>  
 Roll no- 7108

A multitude of a somewhat different kind has been imagined within along theory and its higher-dimensional extension, M-Theory.

String theory is a way of explaining probability and hypothetical statements. Some philosophers believe that all possible worlds exist and that they are just real in the world we live in.

Some pictures of M-Theory:



Big M-Theory

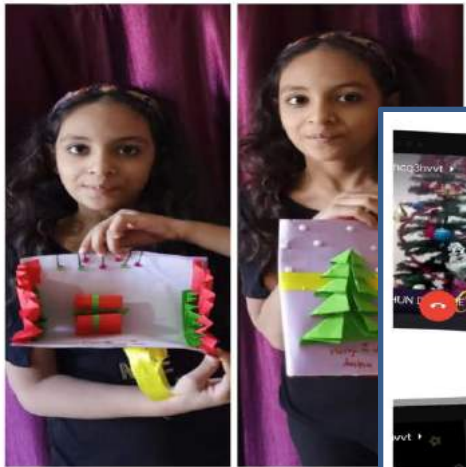
Project by: Anjali Chaudhori  
 Class: XI Roll No: 02 Sub: English  
 Project source: www.uskproj.com  
 Guided by: Jyoti Khandale, Marana

REDMI NOTE 8  
 AI QUAD CAMERA

2020/12/27 14:50



# प्राथमिक विभाग.....CHRISTMAS CELEBRATION

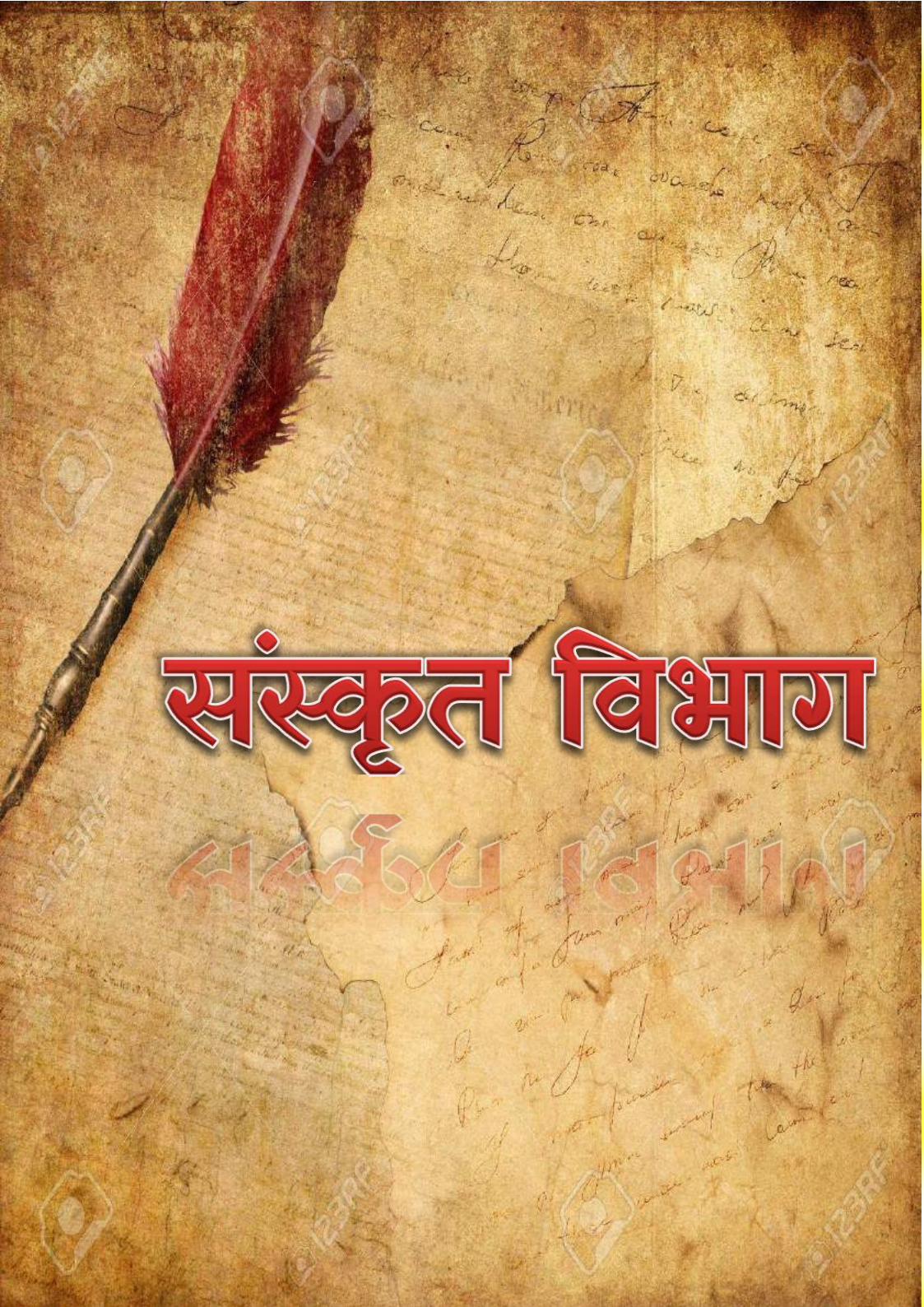


# प्राथमिक विभाग



प्राथमिक विभाग की ओर से 'कोरोना से बचाव- मेरी जिम्मेदारी' इस विषय पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता





# संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग



## “माँ”

- हर्षदा  
जगदीशचंद्र  
गाढे,  
कक्षा - 7



माँ, माँ त्वम् संसारस्य अनुपम  
उपहार,  
न त्वया सदृश्य कस्या स्नेहम्,  
करुणा ममतायाः त्वम मूर्ति,  
न को अपि कर्तुम शनोक्ति तव  
क्षतिपूर्ति ।  
तव चरणयोः मम जीवनम् आस्ति,  
'माँ' शब्दस्य महिमा अपार,  
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,  
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम उपहार ।



## “सुक्तिस्तबकः”

- अथर्व विजय  
जगताप,  
कक्षा - 6



बालादपि ग्रहीतव्यं युक्तमुक्तं  
मनीषिभिः ।  
खेरविषये किं न प्रदीपस्य  
प्रकाशनम् ।।१।।  
पुस्तके पठितः पाठः जीवने नैव  
साधितः ।  
किं भवेत् तेन पाठेन जीवने यो न  
सार्थकः ।।२।।  
प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति  
मानवाः ।  
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का  
दरिद्रता ।।३।।  
गच्छन् पिपीलको याति योजनानां  
शतान्यपि ।  
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न  
गच्छति ।।४।।  
काकः कृष्ण पिकः कृष्ण को भेदः  
पिककाकयोः ।  
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः  
पिकः पिकः ।।५।।

“संस्कृतस्य रचयिता -  
पाणिनी ”

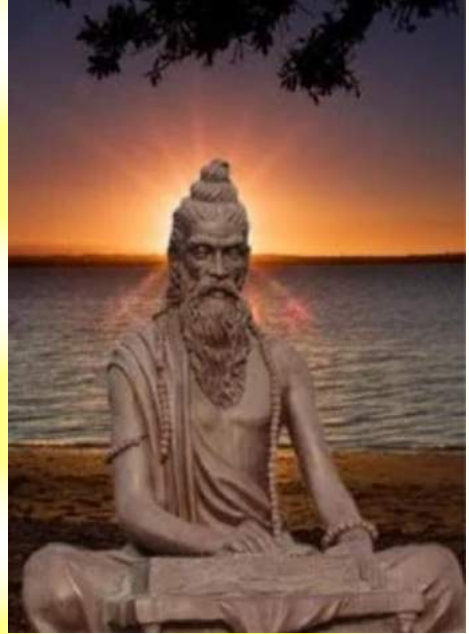
- रिया भाटिया,  
कक्षा - 8



संस्कृत सर्व  
भाषाणाम् जननी अस्ति । परन्तु  
संस्कृतस्य रचयिता कः अस्ति?  
महती भाषायाः रचयिता पाणिनिः  
आसीत् । पाणिनिः संस्कृत  
भाषावादी, व्याकरणवादी तथा हिन्दू  
धर्मस्य सम्माननीय विद्वान् आसीत् ।  
भारतीय भाषाविज्ञानस्य पिता  
पाणिनिः उत्तर-पश्चिम भारतस्य  
उपमहाद्वीपे अवसत् ।

पाणिनिः अष्टाध्यायी नामक  
संस्कृतस्य ग्रंथं अरचयत् ।  
अष्टाध्यायेः पाठः संसारे केचन्  
भाष्यान् आकर्षितं अकुर्वन् येषु  
महर्षि पतंजलेः महाभाष्यः हिन्दू  
परम्परानाम् सर्वप्रमुखः अस्ति ।  
तस्य विचाराः बौद्ध धर्मः तथा

अन्य भारतीय धर्मस्य विद्वांसः  
आकर्षितः प्रभावितः च अकुर्वन् ।  
पाणिनेः सूत्र आधुनिक भाषायाः  
आधारः सन्ति । शास्त्रीय  
संस्कृतस्य प्रारम्भं कर्तुम् पाणिनेः  
व्याकरणस्य व्यापक तथा  
वैज्ञानिक सिद्धांत पारंपारिक रूपेण  
प्रचलितः अस्ति । पाणिनेः  
व्यवस्थित ग्रंथः संस्कृतम् द्वौ  
सहस्राब्दार्थं पठितुं प्रेरितः कृतः ।



पुस्तकानाम् महत्त्वम्  
(मौलिक रचना)

श्रीमती. माला देवी,  
प्रशिक्षित स्नातक  
शिक्षिका संस्कृत



पुस्तकानि सन्ति मित्राणि मानवाः,  
यं पठित्वा भवन्ति जनाः  
विद्वान्सः । 1 ।

यं अस्ति पुस्तकं पठनं रुचिः,  
भवन्ति तेषां बुद्धिः शुचिः । 2 ।

पुस्तकानि सन्ति ज्ञानस्य भाण्डारम्,  
अपाकरोति अस्माकम् अज्ञानं । 3 ।  
मनोरंजनं अपि कुर्वन्ति पुस्तकानि,  
ज्ञानं दत्वा जनान् प्राप्तः  
उच्चपदानि । 4 ।

यं ज्ञातं पुस्तकानां महत्त्वं,  
उन्नतिं संसारे सः प्राप्तं । 5 ।  
चेत् जगति न भवन्ति पुस्तकानि,  
तर्हि मानवजीवने नास्ति कोऽपि  
क्रान्ति । 6 ।

किं भूतो किं भविष्यति ,  
अज्ञातः वयं पर्यन्तं अद्यापि । 7 ।

वेद शास्त्र रामायण भगवद् गीता,  
अनुसूया मैत्रेयी राधा सीता । 8 ।  
इतिहास विज्ञान प्राचीन संस्कृतिः,  
तेषां भवन्ति मानवाः ज्ञानप्राप्ति । 9 ।  
कदापि न कुर्वन्तु तिरस्कारः  
पुस्तकानि, समाविष्टः येषु  
विद्यया सम धनानि । 10 ।  
करिष्यति यदि एतेषाम् सम्मान,  
भविष्यति तर्हि स्वजीवने महान  
। 11 ।



## “गुरु का महत्व”

संकलन -  
सिया अडम,  
कक्षा - 7



पूर्ण तटाके  
तृषितः सदैव

भूतेऽपि गेहे क्षुधितः सः मूढः ।

कल्पद्रुमे सत्यपि वैः दरिद्रः  
गुर्वादियोगेऽपि हि यः प्रमादी  
।।।।।

हिन्दी अर्थ - जो इन्सान गुरु मिलने के बावजूद प्रमादी (अज्ञानी) रहे, वह मूर्ख पानी से भरे हुए सरोवर के पास होते हुए भी प्यासा, घर में अनाज होते हुए भी भूखा, और कल्पवृक्ष के पास रहते हुए भी दरिद्र है ।

एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये  
निवेदयेत् ।

पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद्वत्वा  
ह्यानृणी भवेत् ।।2।।

हिन्दी अर्थ - यदि गुरु शिष्य को थोड़ा सा अक्षर का ज्ञान भी दे दे, गुरु के ज्ञान के इस ऋण

को पृथ्वी पर उपलब्ध किसी भी धन से नहीं चुकाया जा सकता है ।

नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा  
गुरुसंनिधौ ।

गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो  
भवेत् ।।3।।

हिन्दी अर्थ - गुरु के पास हमेशा उनसे छोटे आसन पर बैठना चाहिए । गुरु के सामने अपनी मनमानी से भी नहीं बैठना चाहिए ।

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि  
शतेन च ।

दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः विना  
गुरुकृपां परम् ।।4।।

हिन्दी अर्थ - बहुत ज्यादा सुनने और बोलने से नहीं, करोड़ों शास्त्रों से भी नहीं । चित्त की परम शांति, गुरु के बिना मिलना मुमकिन नहीं है ।

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकारस्तेज  
उच्यते ।

अन्धकार निरोधत्वात्

गुरुरित्यभिधीयते ।। 5 ।।

हिन्दी अर्थ - 'गु' कार यानि  
अन्धकार, और 'रु' कार यानि  
तेज; जो अज्ञान के अन्धकार को  
ज्ञान के प्रकाश से दूर करता है ,  
वही गुरु कहा जाता है ।

“झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई”



संकलन  
पद्माक्षी सोनवणे,  
कक्षा - 6

झाँसीराणीलक्ष्मीवर्यायाः जन्म १८३५  
तमे संवत्सरे नवेम्बरमासस्य १९  
तमे दिनाङ्के अभवत् । सा १८५८  
तमे वर्षे जूनमासस्य १७ दिनाङ्के  
दिवङ्गता । लक्ष्मीबायी वारणास्याम्  
अजायत । सा 'झाँसी की राणी'  
इति नाम्ना ख्यातम् अगात् ।  
भारतस्य प्रथमे स्वातन्त्र्यसङ्ग्रामे  
तस्याः प्रमुखं योगदानम् आसीत् ।

लक्ष्मीबायी उत्तरभारतस्थितस्य  
झान्सीराज्यस्य राज्ञी आसीत् । सा  
आङ्ग्लेयान् विरुद्ध्य भारतस्य  
स्वातन्त्र्यसङ्ग्रामम् आरब्धवती ।  
महाराज्ञी लक्ष्मीः इत्यस्याः  
वीरांगनायाः जन्म महाराष्ट्रे राज्ये  
कृष्णानद्यास्तटे एकस्मिन् ग्रामे  
पञ्चत्रिंशदधिके अष्टादशशततमे वर्षे  
(१८३५) समभूत् । शैशवे अस्याः  
नाम् 'मनुबाई' इति अभूत् ।  
अस्याः जनकः मोरोपन्तः तदानीं  
पेशवा बाजीरावस्य सेवायामसीत् ।  
अस्याः जननी 'भागीरथी बाई'  
साध्वी ईशभक्ता च नारी आसीत् ।  
उभावपि तां प्रियां सुतां मनुदेवीं  
स्नेहेन अपालयताम् । तदा  
बाजीरावः कानपुर नगरस्य  
समीपस्थे बितूरनामके स्थाने  
न्यवसत्, मनुदेव्याः शिक्षणं तत्र  
अभवत् । तत्र सा अचिरं  
शास्त्रविद्यां शस्त्रविद्यां च अलभत ।  
सा तत्र नैपुण्यम् अवाप्नोत् ।  
अश्वारोहणेऽपि मनुबाई अतीव  
कुशलिनी अभवत् ।

## “जननी”



- सृष्टि पाटील,  
कक्षा - 10

अस्मिन् संसारे  
माता एव परम

दैवतमस्ति । मातुः स्थान ग्रहणं तु  
कोऽपि न समर्थः । सर्वोत्कृष्ट  
स्थान मातुरेव । सा तु स्वर्गादपि  
गरीयसी वर्तते । मातरधिकं किमपि  
पूज्यं नास्ति । वेदेषु पुराणग्रंथेषु  
अपि मातुः महात्म्य वर्णितम् ।  
पितुः आचार्यादणं माता श्रेष्ठा अस्ति  
। अतः सर्वप्रथमो अयमुपदेशः ‘

मातृ देवो भव  
‘ इति । ‘पितृ  
देवो भव’  
‘आचार्य देवो  
भव’ इत्यादिकाः उपदेशाः  
पश्चादागच्छन्ति ।



एवं मातुः महत्त्वं सर्वे स्वीकृतम् ।  
सुप्रसिद्धं मातृभक्तं श्रवणकुमारं

को न जानाति । स्वमातृभक्त्या  
सः अमरः जातः ।

## “गणतंत्र दिवस”

अस्माकम् देशः 1947 तमे वर्षे  
अगस्त मासस्य पञ्चदशे दिनाङ्के  
स्वतन्त्रम् अभवत् । परन्तु तदानीं  
अस्य किमपि स्वकीयं संविधानं न  
आसीत् । अतः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद  
महोदयस्य अध्यक्षतायां संविधान  
निर्माणाय एकयाः परिषदः स्थापना  
अभवत् । यदा संविधानम् अंगीकृत्य  
देशे 1950 तमे वर्षे जनवरी  
मासस्य षड्विंशति दिनाङ्के भारतदेशं

प्रजा प्रभुत्वराष्ट्रमिति  
घोषितवन्तः अतः अयं दिवसः  
बहुमहत्त्वपूर्णः विद्यते ।

अस्मिन् दिवसे राष्ट्रपतिः राष्ट्रस्य  
नाम्ना संदेशं प्रसारयति । अस्य  
उत्सवस्य सर्वेऽपि कार्यक्रमः रेडियो  
, दूरदर्शन माध्यमेन सम्पूर्ण देशे  
श्रव्यन्ते दृश्यन्ते च ।



“सदाचारः”



-विराज भालेराव,  
कक्षा - 9

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो  
महान् रिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं  
नावसीदति ॥1॥

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्ने चापराह्निकम्  
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा  
कृतम् ॥2॥

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्  
सत्यमप्रियम् ।

प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः  
सनातनः ॥3॥

सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता  
तथा ।

ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न  
कदाचन ॥4॥

श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं  
तथा ।

मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं  
सदा ॥5॥

मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि  
सुखी जनः ।

इति ज्ञात्वा प्रयासेन  
तदेव परिवर्जयेत् ॥6॥

“प्रकृतिः”



संकलन शिप्रा

चक्रवर्ती,

कक्षा - 8

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्

बहुनाम् अपि फलानाम्,

बहुनाम् अस्ति वृक्षाणाम्

पुष्पाणाम् चापि मातेयम् ।

भ्रमराणाम् च मातास्ति

जनेभ्यः जीवनं सदा ,

ददाति प्रकृतिः माता ।

अस्ति सा तु मनोहरी

मातृणाम् अपि मातास्ति,

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्

नमोस्तु ते मात्रे प्रकृत्यै ॥

## “संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्”

संकलन - कुणाल,  
कक्षा - 10

संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्

1. संस्कृत भाषा सर्व प्राचीना भाषा अस्ति ।
2. संस्कृतभाषा विश्ववन्धुत्वस्य पोषणं करोति ।
3. भारतीयैकता साधकम् संस्कृतम् अस्ति ।
4. संस्कृतसाहित्यं मानवजातेः कृते अमूल्य धनं अस्ति ।
5. संस्कृत भाषा प्राचीनार्वाचीनयोर्मध्ये सेतुः अस्ति ।
6. संस्कृत विश्वस्य महत्तमा भाषा अस्ति ।
7. संस्कृत भाषा लैटिन भाषायाः अपेक्षया अधिक समृद्धं अस्ति ।
8. संस्कृत न केवलं जीवितानाम् अपितु दिवंगतानाम् कृते अपि सञ्जीवनी अस्ति ।
9. अधुना अपि संगणकस्य कृते संस्कृत भाषा अति उपयुक्ता अस्ति ।
10. संस्कृतभाषैव भारतस्य प्राणभूता भाषा अस्ति ।

वदतु संस्कृतम्

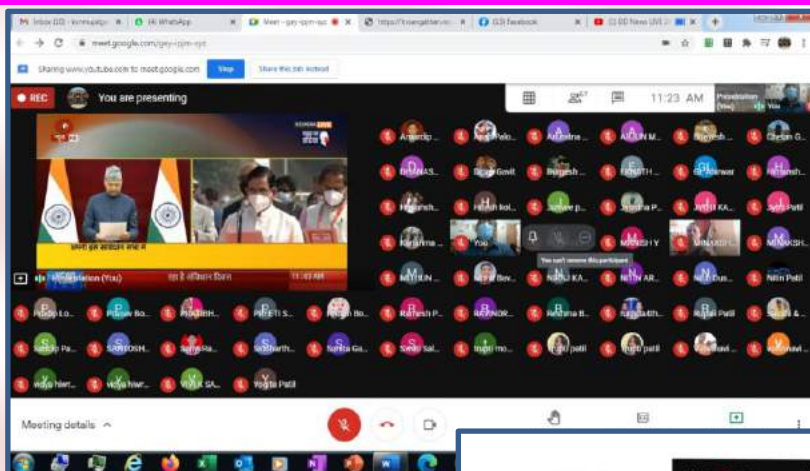


# गतिविधियाँ

dreamstime.

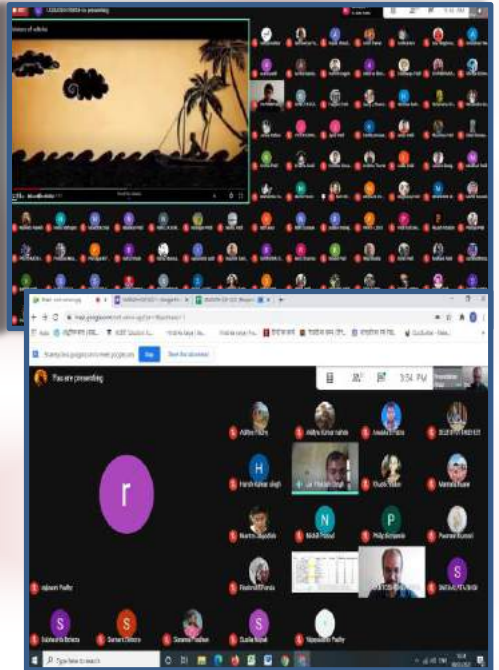
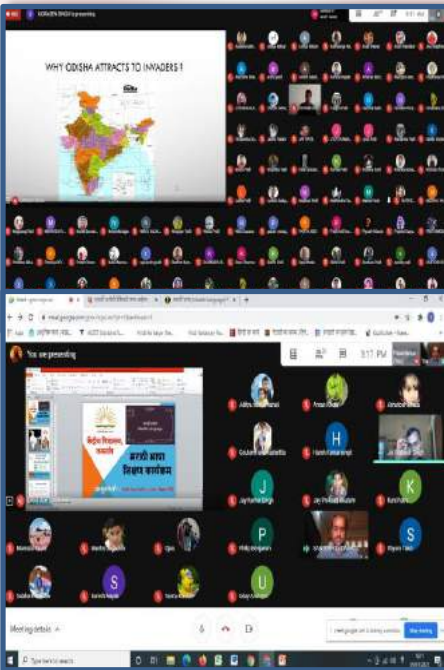
# Activities

# विभिन्न वेबिनार और समारोह





# एक भारत, श्रेष्ठ भारत



एक भारत, श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत मराठी भाषा शिक्षण कार्यक्रम....  
के.वि. सुनाबेड़ा ओड़िशा के विद्यार्थियों के लिए

# स्कार्ट एवं गाइड्स





# राष्ट्रीय खेल दिवस



# विभिन्न समारोह

